Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2017-2019
RNI No. DELHIN/2008/24416

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 12 ❑ वर्ष : 12 ❑ अंक : 11 ❑ नवम्बर, 2018 ❑ मूल्य: 25.00 ❑ दिल्ली

पशु स्वस्थ तो उत्पादन और आमदनी भरपूर

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

बकरी पालन-लाभदायक व्यवसाय

कम पशुओं की डेरी है आसान और फायदेमंद

पशुओं में खुर का अत्यधिक बढ़ना जानकारी एवं निदान

जानें क्या है सेक्सड सीमन

AYURVET

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

ARF
AYURVET RESEARCH FOUNDATION

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है। तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट लिमिटेड

AYURVET

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 12 | अंक : 11 | नवम्बर, 2018 | दिल्ली

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:
डॉ. प्रफुल्ल वर्मा, आनन्द मेहरोत्रा, रत्नेश पाठक एवं अमित जैन

संपादकीय सदस्य:
डॉ. दीप्ति राय, अमित बहल, डॉ.. भास्कर गांगुली, डॉ. राजकुमार यादव, डॉ. योगेश गुप्ता, डॉ. अवध बिहारी शर्मा एवं डॉ. आशीष मुद्‌गल

मूल्य : 25/– रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/– रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली''** के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/– रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली–92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम–71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101–103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच–3, सैक्टर–14, कौशाम्बी–201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91–120–7100201, फैक्स : 91–120–7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- पशु स्वस्थ, तो उत्पादन और आमदनी भरपूर पशुओं की समस्याएं आम, इलाज खास — 5
- सर्दी के मौसम में पशुओं की कैसे करें देख–रेख — 11
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक पशुधन पोषण सुरक्षा कवच — 13
- पशुओं में खुर का अत्यधिक बढ़ना जानकारी एवं निदान — 15
- गोबर धन योजना–खाद एवं ऊर्जा का विकल्प — 18
- जानें क्या है सेक्सड सीमन — 20
- पशुपालकों की गंभीर समस्या दुधारू पशुओं में बांझपन — 23
- कम पशुओं की डेरी है आसान और फायदेमंद, जानिए कैसे — 31
- समन्वित एवं पशुधन आधारित कृषि प्रणाली — 33
- बकरी पालन–लाभदायक व्यवसाय — 37
- छोटा फल, बड़ा फायदा–आंवला — 38
- इस गांव के युवाओं ने परंपरागत खेती छोड़ शुरू की लेयर फार्मिंग, हर महीने कमा रहे लाखों — 42
- खर्च कम, लाभ ज्यादा–मुर्गीपालन — 44

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं — 27
- खोज खबर — 29
- महत्वपूर्ण दिवस — 36

"Save Water, Save Energy, Reduce GHG Emission"

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

प्रकृति ने हम सबको बहुत से ऐसे उपहार संसाधन दिए हैं कि यदि हम उनका विवेकपूर्ण सदुपयोग कर लें, तो हमें बाहर से किसी भी प्रकार के रसायन, उर्वरक, कीटनाशक का बिना प्रयोग किए कम श्रम, कम लागत में गुणवत्तायुक्त उत्पाद प्राप्त किया जा सकता है। जैविक खेती ऐसी ही एक प्राचीन कृषि पद्धति है, जो भूमि के प्राकृतिक स्वरूप बनाएं रखकर, पर्यावरण की शुद्धता एवं मिट्टी की जल धारण क्षमता को बढ़ाती है। कम लागत में गुणवत्तापूर्ण पैदावार होती है। जैविक खेती में गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद, हरी खाद, वैक्टीरिया कल्चर, जैविक खाद और जैविक कीटनाशकों इत्यादि से खेती की जाती है।

खेती महंगी होने का प्रमुख कारण है किसानों का प्राचीन पद्धतियों से दूर होना। खेतों में अब वर्मी कंपोस्ट, देशी खाद, हरी खाद का प्रयोग न करने के कारण लोग रासायनिक खादों पर निर्भर हो गए हैं। पशुपालन की तरफ से भी लोग विमुख हैं, जबकि पशु पालन के बिना जैविक खेती की बात करना ही बेमानी है। किसान बीज, खाद एवं दवा आदि के लिए बाजार पर निर्भर हो गए हैं और उसके दामों में बढ़ोतरी से निश्चित ही किसान की लागत बढ़ जाती है। फिर पिछले कई वर्षो से हम देखते आ रहे है कि रसायनों और कीटनाशकों से खेती में लगातार नुकसान हो रहा है, लागत बढ़ रही है, भूमि अपना प्राकृतिक स्वरूप खोती जा रही है और कृषि उत्पादों की गुणवत्ता खराब होती जा रही है। मनुष्य एवं पशुओं के स्वास्थ्य में गिरावट आई है। आप अनुभव कर सकते है कि आप अपनी आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा उर्वरक और कीटनाशकों में लगा रहे हैं। आप भी अपनी खेती में अधिक मुनाफा लेना चाहते हैं, तो आपको जैविक खेती की तरफ जाना ही होगा।

खेती और पशुपालन एक-दूसरे से परस्पर जुड़े हुए व्यवसाय हैं, जिसमें खेती की लागत का एक हिस्सा जैसे गोबर की खाद पशुओं से प्राप्त होती है। साथ ही, पशुओं का चारा, दाना व बिछावन फसलों के अवशेषों से प्राप्त होता है। इस प्रकार पशुपालन से खेती की लागत कम होती है, जैविक खाद प्राप्त होती है एवं दूध के रूप में अतिरिक्त आय का साधन मिल जाता है। तो आज के दौर में पशुपालन व्यवसाय अगर लगन व समझदारी के साथ किया जाए, तो खेती से भी अधिक आमदनी दे सकता है। कई छोटे डेरी किसान की माने तो पशुपालन 8 एकड़ जमीन जितनी सालाना आमदनी दे सकता है।

तो हमें अपनी आय को बढ़ाने के लिए ऐसी कृषि प्रणाली अपनानी होगी, जिसमें फसल उत्पादन, पशुपालन, फल सब्जी उत्पादन, मछली पालन और वानिकी का समायोजन हो। ये एक दूसरे के पूरक बनकर आसानी से किसान की उत्पादकता बढ़ा देते हैं और आमदनी कई गुना हो जाती है।

इस दिशा में अनेको उपयोगी जानकारियां लिए आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार पत्रिका का नया अंक आपके हाथ में है, तो फिर देर काहे कि पत्रिका के नए अंक में शामिल आलेखों को पढ़े और हमें लिख भेजें कि आपको यह अंक कैसा लगा। प्रकाश पर्व दीपावली की आपको हार्दिक शुभ एवं मंगलकामनाएं।

(मोहन जे. सक्सेना)

पशु स्वस्थ, तो उत्पादन और आमदनी भरपूर

पशुओं की समस्याएं आम, इलाज खास

-डॉ. अनूप कालरा

आयुर्वेट लिमिटेड पिछले 25 वर्षों से पशु स्वास्थ्य क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करता आया है। ब्यांत के बाद होने वाली समस्याओं से निदान, पशुओं के सफल ब्यांत और पशु की उत्पादन क्षमता को बनाये रखने के लिए हम आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार पत्रिका में समय-समय पर सफल प्रजनन एवं अधिक उत्पादन पर आलेख देते रहते हैं। ब्यांत के बाद की समस्याओं जैसे जेर न गिरना, ब्यांत संबंधी तनाव और पाचन संबंधी समस्याओं के निदान हेतु पशुपालक भाइयों के हित में इस आलेख में जानकारी दी गई है।

किसान भाई अपने पशुओं को स्वस्थ रखकर अधिक उत्पादन एवं आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। गाय, भैंस, भेड़, बकरी आमतौर पर जीविका या लाभ के लिए पाले जाते हैं। पशुओं को पालना आधुनिक कृषि का एक महत्वपूर्ण भाग है। पशुपालन व्यवसाय में पशु स्वास्थ्य संरक्षण का अत्यधिक महत्व है। स्वस्थ एवं निरोग पशु ही अपनी क्षमता के अनुरूप उत्पादन दे सकता है।

रोगों से पशु का स्वास्थ्य प्रभावित होता है, उत्पादकता घट जाती है तथा मनुष्यों में भी संक्रमण हो सकता है। अच्छे पशु प्रबंधन द्वारा पशुओं की रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास कर रोगों को कम किया जा सकता है।

हमारे देश में पशुपालन अधिकतर गांवों में किसानों, खेतिहर मजदूरों एवं महिलाओं द्वारा किया जाता है। प्रायः इन्हें पशुओं की देखभाल के सम्बन्ध में पर्याप्त वैज्ञानिक जानकारी नहीं होती है। पशुओं के रखरखाव, खानपान तथा स्वास्थ्य रक्षा के लिए आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति का ध्यान रखने से पशुओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है और पशुपालन को अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है।

पशुपालन से बचेगी खेती

खेती और पशुपालन का रिश्ता अटूट रहा है। आज भी इसे बरकरार रखा जाय, तो न केवल हमें भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए जैविक खाद मिलेगी, बल्कि बड़ी आबादी को रोजगार भी मिलेगा। भारत सहित सारी दुनिया में आज भी खेती और पशुपालन ही सबसे ज्यादा रोजगार देने वाले क्षेत्र हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था खेती-किसानी, पशुपालन और छोटे लघु-कुटीर उद्योगों व व्यवसायों से संचालित होती है। मवेशी किसानों के फिक्स्ड डिपाजिट होते हैं, जिन्हें जरूरत पड़ने पर बेचा जाता है।

दुधारू पशुओं का चयन

- बैंक के तकनीकी अधिकारी/पशुचिकित्सक आदि की सहायता से स्वस्थ एवं अधिक उत्पादन वाला पशु ही खरीदें।
- हाल ही में बच्चा दिये, 2 या 3 ब्यांत का पशु ही खरीदें।
- पशु खरीदने से पहले लगातार 3 समय के दूध को निकालकर देख लेना चाहिए।
- खरीदे गये पशु को तुरन्त रोगों से बचाव के टीके लगवाएं।
- भैंस को जुलाई से फरवरी के मध्य खरीदना ठीक रहता है क्योंकि, भैंस बच्चे देने में सीजनल है।
- पुराने पशुओं की 6 ब्यांत के बाद छंटनी कर देनी चाहिए। कम उत्पादक अथवा अनुत्पादक पशुओं की भी समय-समय पर छंटनी करते रहना चाहिए तथा उनकी जगह नये पशुओं को रखना चाहिए।

उपचार से बेहतर है, रोगों से बचाव

पशुपालकों को प्रतिदिन अपने पशुओं का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना चाहिए। अस्वस्थ पशुओं का पता लगते ही तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए।

ऐसे पहचाने पशु की अस्वस्थता को

रोगी पशु के हावभाव, गति तथा व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। यदि पशु अपनी गर्दन नीचे लटकाये खड़ा होता है, तो यह समझने में देरी न करें कि पशु को कोई बीमारी है। रोगी पशु अपने झुंड से अलग खड़ा होता है। खाने पीने में कमी आ जाती है तथा जुगाली करना बंद कर देते हैं। पशु की खुरदरी तथा शुष्क त्वचा बीमारी की सूचक होती है।

बालों का गिरना, बालों का बड़ा होना, पशु के थूथन तथा नाक से कोई द्रव पदार्थ नहीं निकलना चाहिए। रोगी पशु की आंखें घंसी हुई स्थिर तथा घूरती हुई मालूम पड़ती है। पशु का पेशाब गहरा पीला या खूनी होना या उसका दुर्गन्धमय होना रोग के मुख्य लक्षण हैं।

पशुओं को प्रचुर मात्रा में स्वच्छ जल पिलायें

पशुओं के शरीर में लगभग 65 प्रतिशत पानी तथा दूध में 87 प्रतिशत पानी होता हैं। पशु के शरीर में पानी का इस्तेमाल शरीर का तापमान बनाये रखने के लिए, चमड़ी, पेशाब, फेफड़े, गोबर एवं दुधारू पशुओं में दूध बनाने में होता हैं। तालाबों का गन्दा पानी पिलाना पशुओं में अनेक रोगों, बाह्य एवं आंतरिक परजीवी कीड़ों को जन्म देता है। पशु अपनी इच्छा से जितना पानी पीये, उतना पानी(गर्मियों में 5 बार तथा सर्दियों में 3 बार) पिलायें। दुधारू पशुओं में पानी की कमी का सीधा प्रभाव गाभिन पशुओं में बच्चों की बढ़वार एवं दुग्ध उत्पादन क्षमता पर पड़ता हैं।

पशुओं को पानी की जरूरत सूखे-हरे चारे, सूखे दाने, गर्मी, सर्दी तथा बरसात व दूध उत्पादन क्षमता के हिसाब से होती है। जब हम पशु को सूखे दाने, प्रोटीन, खनिज लवण, खली-बिनोला, गुड़ आदि देते हैं, तब उस पशु को अधिक मात्रा में साफ व ताजे पानी की जरूरत होती है। इसलिए जरूरी है कि किसान अपने पशुओं के लिए भरपूर मात्रा में स्वच्छ जल मौसम के हिसाब से व किस प्रकार का चारा खिलाया (गेंहूं, जौ, चना, मटर, मसूर, उड़द का भूसा, ज्वार-बाजरा की कर्वी, हरा चारा) है तथा पशु के वजन एवं प्रतिदिन दूध देने की मात्रा के हिसाब व समय से पिलायें।

पशुओं में ब्यांत के बाद अधिकतम दुग्ध उत्पादन

पशुओं में ब्यांत के बाद का समय दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। ऐसा इसलिए होता है कि ब्यांत के बाद के तीन महीने में पशु दुग्धकाल के कुल उत्पादन का लगभग 60-65 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन करता है और यदि इस दौरान किन्हीं कारणों से पशु अपनी क्षमतानुसार दूध नहीं दे पाता है, तो इसकी भरपाई हम उस पूरे दुग्धकाल में नहीं कर पाते हैं।

इसलिए इस दौरान पशु का उचित रख-रखाव एवं प्रबंधन, उचित पोषण और पौष्टिक तत्वों का सही मात्रा में पशु द्वारा सेवन अत्यधिक आवश्यक है। यदि हम इन सभी बातों का ध्यान रखें तो निश्चित रूप से हम अपने पशु से इस दौरान पूर्ण दुग्ध उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

पशु आवास

- पशुशाला का निर्माण ऊंचे एवं हवादार स्थान पर करें।
- पशु के खड़े होने का स्थान आगे से पीछे की ओर ढाल वाला हो एवं खुरदरा होना चाहिए।
- पशुशाला की छत 2.25 मीटर ऊंची होनी चाहिये।
- पशुओं को चारा हेतु जमीन से 50 सें.मी. ऊंचाई पर पक्की चरी बनायी जानी चाहिये, जिसकी लम्बाई 75 सें.मी., चौड़ाई 60 सें.मी. एवं गहराई 40 सें.मी. होनी चाहिये एवं इसकी प्रति दिन सफाई करनी चाहिये।

ब्यांत के उपरांत होने वाली मुख्य समस्यायें

ब्यांत के बाद का समय उत्पादन की दृष्टि से पशु एवं पशुपालक दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। ब्यांत के बाद के कुछ माह पशु एवं पशुपालकों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें मुख्य समस्यायें निम्न प्रकार हैं:

जेर का समय से बाहर न निकलना या जेर का फंसना

सामान्य रूप से ब्याने के बाद जेर को 4-8 घंटे में बाहर निकल जाना चाहिए। ये पशु के दूध उतरने एवं गर्भाशय की सही सफाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई बार जेर 8 घंटे से

अधिक समय में बाहर आती है या 12 घंटे से अधिक समय लेती है (जिसे जेर का फंसना कहते हैं) जिससे पशु के समुचित दुग्ध उत्पादन एवं ब्यांत के बाद पुनः गर्भधारण पर कुप्रभाव पड़ता है। कई बार पशु के पिछले भाग से जेर लटकी दिखाई देने पर किसान उसे जबरदस्ती खींचना शुरू कर देते हैं, जिससे पशु के गर्भाशय में चोट लगना/खून आना एवं इंफेक्शन की समस्या पैदा हो जाती है।

ब्यांत के तुरंत बाद सही समय पर जेर बाहर आने से पशु का दुग्ध उत्पादन एवं अगला प्रजनन चक्र सुचारू रूप से चलता है। सही समय पर जेर बाहर निकालने के लिए एक्सापार एक अचूक उपाय है। ऐसे में पशुपालक ब्यांत के तुरंत बाद पशु को हर्बल दवा एक्सापार की 100 मि.ली. मात्रा या 4 बोलस, रेस्टोबल की 50 मि.ली. मात्रा एवं

रुचामैक्स 15 ग्राम दिन में दो बार दें तो बहुत लाभ होगा। दूसरे से पांचवे दिन तक एक्सापार की मात्रा को 50 मि.ली. या 2 बोलस कर दें। रेस्टोबल और रुचामैक्स की मात्रा में पहले की तरह ही देते रहे।

मिल्क फीवर

ब्यांत के कुछ समय बाद दुधारू पशुओं में होने वाली ये एक मुख्य समस्या है। इस बीमारी में पशु में अत्यधिक कमजोरी आ जाती है। वो खाना-पीना छोड़ देता है एवं एक जगह बैठ जाता है और उठ नहीं पाता है। इस बीमारी का मुख्य कारण पशु के शरीर में कैल्शियम की कमी होना है। पशु के आहार में कैल्शियम की कमी एवं उसका शरीर में सही ढंग से अवशोषण न होने से ये समस्या पैदा होती है। क्योंकि दूध में कैल्शियम काफी मात्रा में होता है, इस कारण ये समस्या ब्यांत के बाद अधिक मात्रा में देखने को मिलती है। इस समस्या के कारण पशु के दूध उत्पादन में काफी कमी आती है और पशुपालक का काफी अधिक नुकसान भी होता है।

ऐसे में अगर पशुपालक भाई हर्बल औषधि लैक्टेड की एक बोतल ब्यांत से पहले तथा दूसरी बोतल ब्याने के बाद 6 से 18 घंटे के भीतर दें, तो मिल्क फीवर रोग होने की संभावना को कम किया जा सकता है।

साथ ही याद रखें कि दुधारू पशुओं में कैल्शियम की कमी एक आम समस्या होती है। यही कैल्शियम अन्य पोषक तत्त्वों व पानी के साथ मिल कर पशुओं में दूध बनाता हैं। दूध की जितनी ज्यादा मात्रा पशु के शरीर से निकलेगी, उतना ज्यादा कैल्शियम शरीर से बाहर निकलेगा। अच्छा खानपान होने के बावजूद पशु के शरीर में कैल्शियम की कमी हो जाती है, इसलिए दुधारू पशुओं को कैल्शियम सप्लीमेंट समय-समय पर देते रहना चाहिए। कैल्शियम की कमी को पूरा करने के लिए पशुपालक भाई पशु को कैलधन-वी नियमित रूप से दें, तो दूध की मात्रा तो बढ़ेगी ही साथ-साथ ही पशु भी स्वस्थ रहेगा।

कीटोसिस

यह बीमारी अधिक दूध देने वाले पशुओं में ब्याने के कुछ समय बाद देखने को मिलती है। इसमें पशु सुस्त हो जाता है, खाना पीना छोड़ देता है और दुग्ध उत्पादन में लगातार गिरावट आने लगती है। यदि ये बीमारी लगातार चलती रहे, तो पशु दूध देना बंद कर देता है और प्रजनन संबंधी अनेक समस्यायें पैदा हो जाती हैं। इस बीमारी का एक मुख्य लक्षण है कि पशु के मुंह से एक विशेष मीठी गंध आने लगती है।

ऐसे में पशुपालक भाई अपने पशु को ब्यांत के बाद कीटोरोक की 200 मि.ली. मात्रा रोज दो बार 2 दिन तक और अगले 2 दिन तक 100 मि.ली. मात्रा दिन में एक बार दें, तो पशुओं में कीटोसिस होने की संभावना नहीं रहेगी।

अपचन संबंधी समस्या

ब्याने के तुरंत बाद उचित पोषण की कमी एवं सही चारे एवं दाने का चुनाव न होने के कारण ये समस्या पैदा होती है। कई

बार किसान भाइयों में पशु को सरसों का तेल/घी आदि देने की भी प्रथा होती है जो पशु के पाचन पर विपरीत प्रभाव डालते हैं और पशु में अपचन संबंधी समस्या उत्पन्न हो जाती है।

इसका कुप्रभाव पशु के दुग्ध उत्पादन पर भी पड़ता है। पशु के शरीर में जरूरी पोषक तत्वों की कमी हो जाती है और पशु में अगले प्रजनन संबंधी समस्या भी किसान भाइयों के आर्थिक नुकसान का कारण बनती है।

ऐसे में पशुपालक भाई अपने पशु को हर्बल दवा पचोप्लस की 2 बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक दें, तो अपच और खाने में अरुचि की समस्या से निजात पाया जा सकता है।

थनैला

ब्यांत के उपरांत थनैला रोग दुधारू पशु में होने वाली एक मुख्य समस्या है। थनैला दुधारू गाय-भैसों में छूत से लगने वाला रोग है, जो जीवाणु या फफूंदी तथा अन्य रोगाणुओं द्वारा होता

है। यह रोगाणु गन्दे फर्श, मिट्टी, दूधियों के गन्दे हाथों से थन द्वारा अयन में प्रवेश कर जाते हैं। इस रोग के कारण अधिक दूध देने वाले पशु तथा उच्च गुणवत्तायुक्त आहार खाने वाले पशु ज्यादा प्रभावित होते हैं। रोगी पशु के थन सूज जाते हैं तथा उनमें गाँठें पड़ जाती हैं। दूध दुहते समय पशु को दर्द व बेचैनी होती है। दूध पतला एवं रक्त-मवाद युक्त होता है। थनैला रोग दो प्रकार का होता है। पहला छुपा हुआ थनैला (सबक्लिनिक थनैला), जिसमें कोई स्पष्ट लक्षण नहीं दिखाई देता है, लेकिन दुग्ध उत्पादन में लगातार गिरावट होने लगती है। दूसरा उग्र थनैला (क्लीनिक थनैला) जिसमें पशु के दूध में खून आना,

छिछड़े आना, थनों में सूजन एवं दर्द आदि की शिकायत देखने को मिलती है। किसी भी समस्या के दिखाई देने पर तुरंत पशुचिकित्सक की सलाहनुसार कार्य करें। ये समस्या दो प्रकार से पशु एवं पशुपालक को नुकसान पहुंचाती है एक तो पशु के दुग्ध उत्पादन में कमी एवं दूसरा इलाज पर खर्च।

थनैला से बचाव के लिए पशु के बैठने का स्थान साफ सुथरा एवं सूखा रखें। ध्यान रहे कि पशु के आसपास मक्खियां कम से कम हों। दूध निकालने से पहले अपने हाथ साबुन से अच्छी तरह साफ करें एवं पशु के थनों को साफ पानी से धोयें। पशु का दूध निकालने के आधे घंटे तक पशु जमीन पर न बैठे इस बात का विशेष ध्यान रखें। पशु के बांधने की जगह को स्वच्छ रखना चाहिए। दूध दोहने का सही तरीका अपनायें। स्वस्थ पशुओं का दुग्ध दोहन पहले तथा थनैला रोग से ग्रस्त पशु का दुग्ध दोहन बाद में करें। रोग ग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें। हर 15 दिनों पर पशु के दूध की जांच मैस्ट्रिप से करें और यदि

उसका रंग हरा हो जाए, तो मैस्टीलेप का प्रयोग थनों पर करें। पशुओं को यूनीसेलिट की 10 ग्राम मात्रा प्रतिदिन 15 दिनों के लिए आहार में मिला कर दें। थनों को स्वच्छ और रोगमुक्त रखने के लिए प्राकृतिक उत्पाद मैस्टीडिप के 1 भाग को 2 भाग पानी में मिला कर थनों पर डिप या स्प्रे के रूप में प्रयोग करें।

जरूरत सुपाच्य आहार की

पशु पोषण एवं प्रबंधन में ब्यांत के तुरंत बाद पशु को अच्छा सुपाच्य चारा दें। उसकी खुराक को धीरे-धीरे बढ़ायें एवं पूर्ण

खुराक 5-7 दिनों के बाद दें। हरे चारे/सूखे चारे एवं पशु आहार का अनुपात (2:1) सही पाचन के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए प्रति 2.5 लीटर दूध के लिए 1 किलो पशु आहार देना चाहिए एवं पशु के शरीर के रख-रखाव के लिए 2-2.5 किलो पशु आहार अलग से दें। उदाहरण के लिए एक दुधारू भैंस जिसका दुग्ध उत्पादन 20 लीटर, वजन 400 किग्रा. और फैट 6-7 प्रतिशत है, तो ऐसे पशु को हरा चारा 20 किग्रा., सूखा चारा 10 किग्रा. एवं पशु आहार 4 किग्रा. दें। इस प्रकार से हमें अपने पशु की खुराक को बनाना चाहिए, जिससे कि वो सुचारू रूप से दुग्ध उत्पादन कर सकें एवं सभी पोषक तत्व उन्हें सही मात्रा में मिलते रहें।

इसके अलावा, पशु को कैलधन-वी/आयुमिन वी-5 एवं विटाधन भी दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही तेल/घी आदि न देकर बाईपास फैट हाइलैक पशु को दें, जिससे उसकी पाचन क्रिया सुचारू रूप से चले।

पशु में प्रजनन एवं दुग्ध उत्पादन संबंधी तनाव से बचाने के लिए रेस्टोबल का प्रयोग पांच दिनों तक करें एवं अपचन संबंधी विकार होने पर रुचामैक्स 3 दिनों तक सुबह शाम दें।

इस तरह हम अपचन/मिल्क फीवर एवं कीटोसिस आदि परेशानियों से बच सकते हैं। इन सभी सावधनियों एवं उपायों को करने से पशु का स्वास्थ्य एवं उत्पादन सुचारू रूप से चलेगा और हम अपने पशु से भरपूर दुग्ध उत्पादन एवं मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं।

□□

कीटोसिस एवं नेगेटिव ऊर्जा से छुटकारा पाएं
कीटोरोक अपनाएं
AYURVET
कीटोरोक के फायदे
•लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
•शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
•दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे
पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय
KETOROAK
LIQUID
कीटोरोक
कीटोरोक
कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए
उपचार के लिए:
200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार 2 दिनों तक, अगले 2 दिन 100 मि.ली. दिन में एक बार

सर्दी के मौसम में पशुओं की कैसे करें देख-रेख

-डा. राजेन्द्र सिंह

सर्दी के मौसम में पशुओं के रख रखाव उन्हें संतुलित मात्रा में उचित चारा देकर पशुपालक दूध की क्षमता बढ़ा सकते हैं। दूध उत्पादन में कमी का मुख्य कारण पशुओं को उसी अनुपात में मिलने वाली खुराक है। सर्दी के दिनों में पशुओ को सामान्य दिनों के अपेक्षा ज्यादा खुराक देनी चाहिए। पशु को मिलने वाला संतुलित राशन दूध उत्पादन को बढ़ाता है।

वैसे तो प्रकृति ने पशु के शरीर की सरंचना ऐसी बनाई है, जिससे पशु आन्तरिक व बाहरी परिस्थितियों से निपटने में सक्षम होता है। परन्तु पशुधन से अधिक लाभ व धन कमाने के लिए किसी भी प्रकार का बाहरी प्रभाव का असर पशु के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर न डाले। उसकी अधिक ऊर्जा न लगे। इसके लिए उचित प्रबन्ध करना अति आवश्यक है, ताकि उसकी यह बची हुई ऊर्जा उत्पादन पर लगे, नहीं तो पशुओं का उत्पादन, बढ़वार एवं स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा तथा अनावश्यक ऊर्जा का क्षय हो जाएगा।

इसी प्रकार से सर्दी का मौसम भी पशुओं के उत्पादन व स्वास्थ्य पर काफी बुरा प्रभाव डालता है। यदि ठीक प्रकार से प्रबन्ध नहीं किया गया, तो हम अपने पशुओं से अधिक उत्पादन प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए हमें निम्नलिखित बातों के साथ-साथ पशु का उचित प्रबन्ध करना भी जरूरी है, ताकि पशुओं की उत्पादन क्षमता बढ़ा सकें।

पशु घर

अगर हम ने नया आधुनिक पशुघर बनाना है, तो उस के लिए स्थान का चुनाव, ऊंचे स्थान पर एवं उसका समतल होना जरूरी है। रोड के नजदीक हो। इसके साथ-साथ पशुघर के अन्दर धूप उत्तरी हिस्से में अधिक तथा कम से कम दक्षिण भाग में आनी चाहिए। इस तरह की दिशा पशुघर की होने पर तेज ठण्ड तथा गर्म हवाओं से पशुओं का बचाव हो जाता है। अगर पशुघर के अन्दर धूप-रोशनी व हवा का आवागमन होगा, तो पशुघर के अन्दर गैसों (अमोनिया व कार्बनडाइआक्साइड) की उत्पति कम होगी, जिससे पशु का स्वास्थ्य व उत्पादन ठीक बना रहेगा ।

इसके साथ-साथ सर्दी के मौसम में बाहर के तापमान व अन्दर के तापमान में काफी अन्तर आ जाता है । पशु के शरीर का सामान्य तापमान विशेषतौर से गाय व भैंस का क्रम से 101.5 डिग्री फार्नहाईट व 98.3 - 103 डिग्री फार्नहाईट (सर्दी - गर्मी) रहता है। पशुघर के बाहर का तापमान शून्य तक चला जाता है, यानि पाला तक जम जाता है। इसके लिए पशु का बिछावन छः इंच मोटा करें, गिला न होने दें यानि उसे सूखा रखें। खिड़कियों पर बोरी व टाट के पर्दे लगाएं तथा ध्यान रखें कि ये पर्दे खिड़की व दरवाजे से चिपके नहीं व सीधी शीत लहर पशु को न लगे। इसके लिए ऐसा प्रबन्ध करें कि पशु को पशुघर में भरपूर आराम मिले।

खान-पान

पशुओं को हमेशा सन्तुलित आहार दें, जिसके अन्दर ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज तत्व, पानी, विटामिन व वसा विद्यमान हो। आप अपने घर में भी सन्तुलित आहार बना सकते हैं, जिसका 100 किलोग्राम का नमूना निम्न प्रकार से है-

अनाज व दाने (गेहूं, बाजरा, मक्का, जौं, जई)-40

किलोग्राम, चोकर-25 किलोग्राम, खले (सरसों, बिनौला, सोयाबीन, मूंगफली इत्यादि)-32 किलोग्राम, खनिज मिश्रण-2 किलोग्राम, साधारण नमक-1 किलोग्राम ।

कृपया विशेष ध्यान रखें-1. बिनौला, विशेषतौर से ज्यादा दूध देने वाले पशुओं को खिलाना चाहिए। बिनौला दूध के अन्दर चिकनाई की मात्रा बढ़ाता है। 2. बाजरा भी पशुओं को कम हजम होता है, इसलिए बाजरा किसी भी सन्तुलित आहार/बाखर में 20 प्रतिशत से अधिक नहीं मिलाना चाहिए। 3. पशु की खोर के ऊपर सेंधा नमक का ढेला रखें, ताकि पशु जरूरतानुसार उसको चाट ले।

इसके साथ-साथ सर्दी के मौसम में पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए पशु आहार में 35 प्रतिशत अतिरिक्त ऊर्जा वाले (अनाज व दाने) सम्मिलित करें। यानि 65 प्रतिशत तक ऊर्जा सर्दी के मौसम में विशेष तौर से दूध देने वाले पशु को देनी चाहिए। इसके साथ-साथ पशुओं को हरे चारे व सूखे चारे मिलाकर खिलाने चाहिए। कई किसान भाई इस सर्दी के मौसम में हरा चारा अधिक होने के कारण सिर्फ हरा चारा खिलाने की कोशिश करते हैं। इसके कारण पशुओं को अफारा व अपचन हो जाती है।

पानी

पशुओं को सर्दी के मौसम में गुनगुना, ताजा व स्वच्छ पानी भरपूर मात्रा में पिलाऐं, क्योंकि पानी से ही दूध बनता है तथा शरीर की सारी क्रियाएं सुचारू रूप से चलती हैं। पशु शरीर के अन्दर 65 प्रतिशत और दूध के अन्दर 83 से 87 प्रतिशत पानी होता है। इसलिए दूध उत्पादन में पानी का विशेष स्थान है।

अन्य देखभाल

खान-पान का समय एक रखें। दूध निकालने का समय भी एक रखें। ज्यादा दुधारू पशुओं को ऊर्जा की पूर्ति के लिए विशेष तौर से गुड़ की आवटी पिलाएं, दूध निकालते वक्त, लेवटी, थनों एवं पीछे की सफाई गुनगुने पानी से लाल दवाई मिलाकर करें।

बाखर, दूध निकालते वक्त व बाद में जरूर खिलाएं, इससे पशु का पौसा बढ़िया रहता है और थनैला रोग से बचाव होता रहता है। दूध निकालने के क्रिया पांच से सात मिनट में पूरी करें। ज्यादा समय लेने से पशु दूध चढ़ा लेता है, पूरा दूध नहीं उतारता। दुधारू पशुओं को अगर ठण्ड लग गई है, तो पशु का दूध कम हो जाएगा एवं बच्चों को निमोनिया हो सकता है।

इसमें कोई कोताही न बरते पशु चिकित्सक की तुरन्त सेवाएं लें। छोटे बच्चों को विटामिन दें और जूण और चीचड़ का उपचार करें। मक्खी मच्छर से बचाने के लिए मच्छर दानी का इस्तेमाल करें।

पशुघर के अन्दर की साफ सफाई रखें। उनको धूप में बांधे व गर्म दिन वाले दिन ताजे पानी से नहलाएं व बाद में सरसों का तेल थोड़ा-थोड़ा शरीर पर लगाएं, जो पशु के शरीर की खुश्की, चमड़ी पर रूखापन व खुजली होने से बचाएगा।

दिन में पशुघर के पर्दे वगैरह हटा दें, ताकि पशुघर के अन्दर रोशनी व हवा आर-पार हो जाए। रात को सूर्यास्त से पहले उनको अन्दर बांध दें। इसके साथ-साथ पशुघर के अन्दर गाय को 3.5 वर्गमीटर व भैंस को 4 वर्ग मीटर स्थान दें यानि कम जगह में अधिक पशु न बांधें। इसके साथ दिन में पशुओं को घूमने के लिए पशुघर के अन्दर के स्थान से दुगना स्थान दें।

टीकाकरण

बचाव इलाज से बेहतर है कि पद्धति को अपनाते हुए पशुओं को रोगों से बचाने के लिए टीकाकरण का कार्यक्रम अपनाएं। इसके लिए आप पशुपालन विभाग के कर्मचारियों व अधिकारियों को सहयोग दें।

इस प्रकार से हम अच्छी नस्ल को पालते हुए उच्च जन्मदर को ध्यान में रख कर। उचित प्रबन्धन के साथ हम अपने पशुओं को संतुलित आहार, पानी एवं आरामदायक आवास प्रदान करके विभिन्न प्रकार के रोगों से बचा सकते हैं। इससे हम पशुओं का उत्पादन बढ़ाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। □□

वरिष्ठ विस्तार विशेषज्ञ, पशु विज्ञान, रोहतक, लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा व पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक पशुधन पोषण सुरक्षा कवच

आयुर्वेट द्वारा अपने फाईव एफ कार्यक्रम के तहत फूड, फीड, फॉडर यानी भोजन, पशु दाना और चारा को प्राथमिकता दी गई है, जो पोषण सुरक्षा देने वाले पशु को स्वस्थ एवं बलिष्ठ बनाता है। परिणामस्वरूप वह बेहतर वृद्धि पाकर अधिक उत्पादन देता है।

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। आयुर्वेट लिमिटेड द्वारा आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक विकसित की गई है। इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत होती है। वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है। पौधों में कीट और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है। हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है, क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है। इसीलिए आयुर्वेट ने इसपर कार्य करना शुरू किया। आयुर्वेट हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक पर्यावरण अनुकूल है। इस में तापमान और आर्द्रता नियंत्रित रहती है। इसलिए पूरे वर्ष फसल ली जा सकती है अर्थात् मौसम का प्रभाव इसपर नहीं पड़ता। पारंपरिक चारे की तुलना में हाइड्रोपोनिक्स मशीन से प्राप्त चारा अधिक पाचक, पौष्टिक, प्रोटीनयुक्त एवं उच्च गुणवत्ता वाला होता है। इस हरे चारे के सेवन से पशु की उत्पादकता बढ़ती है और स्वास्थ्य अच्छा रहता है। पशु प्रजनन क्षमता में सुधार होता है।

आयुर्वेट की ये मशीनें सुमूल(सूरत), राजस्थान वेटेनेरी यूनिवर्सिटी के बीकानेर, उदयपुर, जयपुर, जिंदल फार्म (नोएडा एवं रायपुर), श्री बालाजी गौशाला सालासर, राजलदेसर गौशाला (चुरु), श्री कृष्णा गौशाला (दिल्ली), पूसा संस्थान (समस्तीपुर, बिहार) और पशुपालन विभाग (अंडमान) केंद्रों में हरे चारे के उत्पादन के लिए लगी है।

जान लीजिए कि पशुधन स्वस्थ होगा तो आपको भी स्वस्थ रहने का वरदान देगा। आज इस बात की नितांत आवश्यकता है कि किसान मात्र फसलों से जुड़कर ही न रह जाए वह पशुपालन भी करें। यही पशु है जो उसकी आड़े वक्त में मदद करेगा। प्राकृतिक आपदा जिसपर मानव का वश नहीं है यदि फसल पर चोट करती है तो ऐसे में पशुधन साथ खड़ा होगा। वह आपकी पोषण सुरक्षा की गारंटी लेगा और आय भी कराएगा।

अब सस्ती है मशीन

कंपनी के पास विभिन्न प्रकार के मॉडल उपलब्ध हैं, जो 125 कि.ग्रा. से लेकर 1000 कि.ग्रा. चारा (मक्का, जौ एवं जई) देने की क्षमता रखते हैं। पहले यह मशीन महंगी थी,

पर अब इस समस्या का भी समाधान तलाश लिया गया है। चूंकि अब मशीन के मॉडल के हिसाब से कीमत निर्धारित की गई है। मशीन की कीमत मॉडल के हिसाब से साढ़े चार लाख से बीस लाख तक है। मशीन जहां एक ओर पानी, भूमि व मजदूरों की बचत करती है। वहीं दूसरी ओर पारंपरिक चारे से बेहतर गुणवतापूर्ण चारा भी प्रदान करती है। इस पर विशेष बात यह भी है कि इस मशीन के लिए कोई भी तकनीकी रूप से प्रशिक्षित कार्यकर्ता की आवश्यकता नहीं है। इसका संचालन भी आसान है, जो सामान्य व्यक्ति भी पूरा कर सकता है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन धान की पौध

क्या आप जानते हैं कि धान की पौध मात्र सात दिनों में तैयार की जा सकती है...।

अगर नहीं तो आज हम ऐसी ही तकनीक के बारे में आपको जानकारी देगे, जिसमें पशुओं के लिए हरे चारे के साथ-साथ धान की पौध भी तैयार की जा सकती है और वो भी बहुत कम पानी और जमीन के साथ।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स ऐसी ही एक तकनीक है। इस विधि द्वारा धान की नर्सरी तैयार करने में बहुत कम समय, जमीन, पानी एवं उर्वरक की आवश्यकता पड़ती है। साथ ही इसमें बीमारियां भी कम लगती है। इस तकनीक से उत्पादित पौध को ट्रांसप्लांटर की मदद से, बिना अधिक

लेबर के, आसानी से रोपित किया जा सकता है, जबकि परंपरागत तरीके से धान की पौध तैयार करने में लगभग 25 दिन लगते हैं। बीमारियां लगने की आशंका रहती है। पौध को खेत में लगाने के लिए बड़ी संख्या में लेबर की जरूरत पड़ती है। इन्हीं सभी परेशानियों को ध्यान में रखकर हमने किसानों के लाभ हेतु इस तकनीक को विकसित किया है।

वर्ष 2018 खरीफ में आयुर्वेट लिमिटेड ने नाबार्ड के साथ मिलकर सोनीपत तथा पानीपत के लगभग 100 किसानों के हजारों एकड़ एरिया में धान की नर्सरी रोपित कर रहा है। किसान इस क्रांतिकारी तकनीक से भरपूर लाभ उठा रहे हैं। आप भी आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स मशीन के लिए संपर्क कर सकते हैं-9179568382, email: hvsingh@ayurvet.com

पशुओं में खुर का अत्यधिक बढ़ना जानकारी एवं निदान

-आलोक कुमार सिंह

दिन प्रतिदिन घटते चारगाह, असंतुलित पशुपालन, शहरों में छोटे से छोटे स्थान पर बांधकर पशुपालन करने, पशुओं के खुरों की उचित देखभाल के अभाव में आजकल पशु का खुर अत्यधिक बढ़ रहा है। इस कारण पशु चलने-फिरने व खड़ा होने में धीरे-धीरे असमर्थ होने लगता है। फलस्वरूप पशु बीमार, कमजोर दिखने लगता है। इससे उत्पादन कार्य भी बाधित हो जाता है। यह समस्या लगभग छोटे पशुओं बकरी से लेकर हुए गाय-भैंस तक में पायी जाती है।

पशुओं में खुर का बढ़ना एक सतत् प्राकृतिक प्रक्रिया है। चलायमान पशुओं के खुर घिसते रहते है। इससे खुर अपने उचित आकार में बने रहते हैं, परन्तु दिन प्रतिदिन घटते चारगाह, असंतुलित पशुपालन, शहरों में छोटे से छोटे स्थान पर बांध कर पशुपालन करने, पशुओं के खुरों की उचित देखभाल व कटाई-छटाई, रगड़ाई के अभाव में आजकल पशु का खुर अत्यधिक बढ़ रहा है। इस कारण पशु चलने-फिरने व खड़ा होने में धीरे-धीरे असमर्थ होने लगता है। साथ ही पशु के स्वास्थ्य का तीव्र क्षरण भी प्रारम्भ हो जाता है। फलस्वरूप पशु बीमार, कमजोर दिखने लगता है। इससे उत्पादन कार्य भी बाधित हो जाता है। यह समस्या लगभग छोटे पशुओं बकरी से लेते हुए गाय-भैंस तक में पायी जाती है। इस समस्या के कारण पशुपालकों को भारी आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है।

कारण

खुर का अत्यधिक बढ़ना निम्नलिखित प्रमुख कारणों से होता है -

- लम्बे समय तक पशु को एक ही स्थान पर बाँध कर पशुपालन करना। इससे पशु के खुर एक ही स्थान पर बंधे रहने के कारण घिसावट के अभाव में निरंतर बढ़ते रहते है।
- कभी-कभी प्राकृतिक कारणों अथवा आनुवांशिक/वंशागत गुणों के हस्तान्तरण या शारीरिक विकृति इत्यादि के कारण से भी पशुओं के खुर में तीव्र वृद्धि देखने को मिलती है। इससे पशु के खुर सामान्य की अपेक्षा अधिक बढ़ जाते है।
- अत्यधिक उम्र होने के कारण भी खुर बढ़ते है।
- कैल्शियम का क्षरण जब पशु शरीर से अधिक होता है। इस दशा में भी पशुओं के खुर में वृद्धि देखी जाती है।
- पशु जब अत्यधिक कमजोर हो जाता है, तब भी खुर बढ़ जाता है।
- पशु को जब संतुलित राशन (चारा-दाना) नहीं प्राप्त होता है, तब भी खुर का बढ़ना जारी रहता है।
- बैक्टिरियल बीमारी, जोकि गंदे बाड़ों में चराई के दौरान पशु के खुरों में लगती है। उसके कारण भी खुर असामान्य हो जाते है।
- जब पशु चलने फिरने में असमर्थ हो जाता है, तब भी खुर अत्यधिक बढ़ते हैं।

लक्षण

- उपरोक्त सभी कारणों के कारण एक समय ऐसा आता है कि पशु के खुर इतना अत्यधिक बढ़ जाते है कि पशु जब चलने की कोशिश करता है, तो खुर के अत्यधिक बढ़े होने के कारण बार-बार पशु को ठोकर लगती रहती है, जिससे पशु को कष्ट होता है। अतः पशु घुटनों के बल अथवा बढ़े

हुए खुर के पैर को मोड़ कर चलने का प्रयास करता है।
- पशु के खुर बढ़े हुए दिखते है।
- पशु लंगड़ा कर चलता है।
- बढ़े खुर वाले पैर का प्रयोग पशु चलने फिरने में नहीं करता है।
- पशु चलने-फिरने से परहेज करता है।
- पशु को चलने पर कष्ट होता है।
- पशु का खुराक (भोजन) कम हो जाता है।
- धीरे-धीरे उत्पादन भी कम हो जाता है।
- पशु के शारीरिक वृद्धि में कमी दर्ज की जाती है।
- मादा पशु समय से गर्मी में नहीं आती तथा नर पशु प्रजनन कार्य के प्रति उदासीन हो जाता है।
- पशु के खुर में घाव की शिकायत मिलती है।
- बढ़े हुए खुर में ज्यादा चोट के कारण खून बहने लगता है।
- पशु अत्यन्त कमजोर व सुस्त दिखता है।

उपचार

- पशुओं में खुर बढ़ने की समस्या के उपचार हेतु खुर बढ़े पशु को अन्य पशुओं से अलग कर उसके खुर की कटाई-छटाई व रगड़ाई करा देना चाहिए।
- शहरी पशुपालकों को रेगमाल, रेती, चाकू आदि से कुशल खुर काटने वाले तथा पशुचिकित्सक की उपस्थिति में पशु के खुर की घिसाई, रगड़ाई एवं कटाई-छटाई कराते रहना चाहिए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखे कि खुर को एक सीमा से अधिक न कटे वरन् ज्यादा कटने से भी पशु को कष्ट हो सकता है। समय समय पर पशु चिकित्सक से पशुओं का अवलोकन कराते रहे तथा अपेक्षित उपचार को अपनाएं।

बचाव व रोकथाम

- इस समस्या से बचाव व रोकथाम हेतु कभी भी पशुपालन के अन्तर्गत पशुओं को लम्बे समय तक एक ही स्थान पर बांध कर खिलाई-पिलाई से बचना चाहिए।
- यथा सम्भव पशुओं को समय-समय पर चारागाह में भेजते रहना चाहिए, जिससे प्राकृतिक रूप से खुर घिस कर अपने उचित आकार में बने रहें।
- शहरों में अथवा ग्रामीण अंचल में पशुपालन को अपनाने से पूर्व पशु चिकित्सकों एवं पशु वैज्ञानिकों से सलाह-परामर्श ले लेना चाहिए तथा उनके द्वारा सुझाये गये उपयुक्त प्रजाति का चयन पशुपालन में करना चाहिए। जैसे- बकरी की बरबरी नस्ल शहरों में बांध कर पालने हेतु सर्वोत्तम है।

- खुर बढ़े पशुओं का चयन पशुपालन व्यवसाय में नहीं करना चाहिए।
- पशु के खुरों का भी अवलोकन करते रहना चाहिए तथा बढ़ा हुआ प्रतीत होने पर तत्काल पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।
- पशुओं को संतुलित आहार दिया जाये।
- पशु बाड़े की नियमित साफ-सफाई कराते रहना चाहिए।
- पशुओं के खुर को कीटाणुनाशक से उपचारित कराते रहना चाहिए।
- साफ-सुथरे व स्वस्थ बाड़ों में चराई हेतु पशुओं को भेजे।
- पशुपालक को पशुओं के चलने-फिरने, व्यायाम, चराई हेतु पर्याप्त खुले स्थान की व्यवस्था करनी चाहिए।
- कम स्थान में अधिक संख्या में पशुपालन से बचाना चाहिए। श्रेष्ठ होगा कि विभिन्न पशुओं के लिए सुझाई गई सिफारिशों के अनुसार ही आदर्श माप में प्रत्येक पशु को स्थान उपलब्ध कराना चाहिए।
- शहरी पशुओं को समय-समय पर ग्रामीण अंचल में ग्रीष्मकालीन चराई हेतु भेजते रहना चाहिए।
- पशुओं को कच्चे-पक्के दोनों स्थानों पर चलाते-फिराते रहना चाहिये।
- बढ़े हुए खुरों से निजात पाने के लिए नियमित रूप से कतरन करते रहना चाहिये।

उपरोक्त बचाव व रोकथाम के उपायों को अपनाने से पशुओं में बढ़ते खुर अथवा खुर बढ़ने की समस्या को नियन्त्रित किया जा सकता है। □□

शोध छात्र, बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय, बनारस

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक
AYURVET
पशुचिकित्सकों द्वारा
अपनाया गया वैज्ञानिक
रूप से जांचा परखा
भरोसेमंद हर्बल उपाय
रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए
पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं
उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान
RESTOBAL
रैस्टोबल
500 मि.ली.
1 लीटर

गोबर धन योजना

खाद एवं ऊर्जा का विकल्प

'स्वच्छ भारत' अभियान के तहत गांवों के लिए बायोगैस के माध्यम से वेस्ट टू वेल्थ और वेस्ट टू एनर्जी बनाने पर जोर दिया गया। इस गोबर धन योजना का उद्देश्य गांवों को स्वच्छ बनाना और पशुओं के गोबर और खेतों के ठोस अपशिष्ट पर्दाथों को कंपोस्ट और बायो-गैस में परिवर्तित कर, उससे धन और ऊर्जा उत्पादन करना है।

भारत में मवेशियों की आबादी पूरे विश्व में सबसे ज्यादा है। भारत में मवेशियों की आबादी लगभग 30 करोड़ है और गोबर का उत्पादन प्रतिदिन लगभग 30 लाख टन है। कुछ यूरोपीय देश और चीन पशुओं के गोबर और अन्य जैविक अपशिष्ट का उपयोग ऊर्जा के उत्पादन के लिए करते हैं, लेकिन भारत में इसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा था। ऐसे में केंद्र सरकार ने गोबर धन योजना की घोषणा बजट 2018 में की थी। बजट में वित्त मंत्री अरुण जेटली ने ग्रामीणों के जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश के तहत इस योजना का जिक्र किया था। इस योजना के तहत गोबर और खेतों के बेकार या इस्तेमाल में न आने वाले उत्पादों को कम्पोस्ट, बायो-गैस और बायो-सीएनजी में बदल दिया जाएगा। 'स्वच्छ भारत' अभियान के तहत गांवों के लिए बायोगैस के माध्यम से वेस्ट टू वेल्थ और वेस्ट टू एनर्जी बनाने पर जोर दिया गया। इस गोबर धन योजना का उद्देश्य गांवों को स्वच्छ बनाना और पशुओं के गोबर और खेतों के ठोस अपशिष्ट पर्दाथों को कंपोस्ट और बायो-गैस में परिवर्तित कर, उससे धन और ऊर्जा उत्पादन करना है।

गोबर योजना के लाभ

मवेशियों के गोबर, कृषि से निकलने वाले कचरे, रसोई घर से निकलने वाला कचरा, इन सबको बायोगैस आधारित ऊर्जा बनाने के लिए इस्तेमाल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। 'गोबर धन योजना' के तहत ग्रामीण भारत में किसान बहनों, भाइयों को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वो गोबर और कचरे को सिर्फ कचरे के रूप में नहीं, बल्कि आय के स्रोत के रूप में देखें।

- 'गोबर धन योजना' से ग्रामीण क्षेत्रों को कई लाभ मिलेंगे और गांव को स्वच्छ रखने में मदद मिलेगी।
- इससे पशु-आरोग्य बेहतर होगा और उत्पादकता बढ़ेगी।
- बायोगैस से खाना पकाने और लाइटिंग के लिए ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।
- किसानों एवं पशुपालकों को आमदनी बढ़ाने में मदद मिलेगी।
- बायोगैस की बिक्री आदि के लिए नई नौकरियों के अवसर मिलेंगे।

ऐसे होगा काम

गोबर धन योजना के सुचारू व्यवस्था के लिए एक ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म भी बनाया जाएगा, जो किसानों को खरीदारों से कनेक्ट करेगा, ताकि किसानों को गोबर और एग्रीकल्चर वेस्ट का सही दाम मिल सके।

गोबर-धन (गैल्वनाइज़िंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सेज़-धन) योजना

इस योजना के मुख्यतः दो उद्देश्य हैं-गाँवों को स्वच्छ बनाना एवं पशुओं और अन्य प्रकार के जैविक अपशिष्ट से अतिरिक्त आय तथा ऊर्जा उत्पन्न करना। गोबर-धन योजना के अंतर्गत पशुओं के गोबर और खेतों के ठोस अपशिष्ट पदार्थो को कम्पोस्ट, बायोगैस, बायो-सीएनजी में परिवर्तित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम का लक्ष्य उद्यमियों को जैविक खाद, बायोगैस/बायो-सीएनजी उत्पादन के लिये गाँवों के क्लस्टर्स बनाकर इनमें पशुओं का गोबर और ठोस अपशिष्टों के एकत्रीकरण और संग्रहण को बढ़ावा देना है। फिलहाल प्रत्येक ज़िले में एक क्लस्टर का निर्माण करते हुए लगभग 700 क्लस्टर्स स्थापित करने की योजना है। इसके तहत जैव-ऊर्जा मूल्य श्रृंखला के

सभी श्रेणियों में छोटे और बड़े पैमाने पर परिचालनों को शामिल करते हुए विभिन्न व्यवसाय मॉडल विकसित किये जा रहे हैं।

योजना की सफलता की संभावनाएं

दुनिया में सबसे बड़ी पशु जनसंख्या के साथ भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर की बड़ी मात्रा को धन और ऊर्जा में बदलकर इसका लाभ उठाने की इस योजना में क्षमता है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के एक अध्ययन (2014) के मुताबिक गोबर का प्रोडक्टिव तरीके से उपयोग राष्ट्रीय स्तर पर 15 लाख रोज़गारों का सृजन कर सकता है। जैसे- एक किसान के लिये गोबर की बिक्री आय का एक महत्त्वपूर्ण अतिरिक्त स्रोत सिद्ध हो सकता है। गोबर-धन की पहल से पशुओं का गोबर और अन्य कार्बनिक अपशिष्ट को खाद, बायोगैस और यहां तक कि बड़े पैमाने पर बायो-सीएनजी इकाइयों में परिवर्तित करने के लिये ऐसे ही अवसरों का सृजन किये जाने की संभावना है। स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण इस पहल का मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छ भारत मिशन का प्रमुख लक्ष्य भारत को खुले में शौच से मुक्त बनाने के साथ ही शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में स्वच्छता का प्रसार करना है। इस मिशन के तहत अच्छी प्रगति हुई है। ग्रामीण स्वच्छता कवरेज अक्टूबर 2014 में 39 प्रतिशत से बढ़कर वर्तमान में 78 प्रतिशत हो गया है और लगभग 3,20,000 गाँवों को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जा चुका है। गोबर-धन योजना के साथ एकीकृत कर इस दिशा में प्रगति की जा सकती है।

चुनौतियाँ

इसमें प्रमुख चुनौती गोबर के उपयोग में मूल्यवर्द्धन और किसानों के बीच मवेशियों के अपशिष्ट को आय अर्जक साधन की तरह प्रोत्साहित करने के साथ ही समुदाय में स्वच्छता बनाए रखना है। बायोगैस संयंत्रों के संचालन के लिये एक प्रमुख चुनौती पशु अपशिष्ट का एकत्रीकरण और संयंत्र ऑपरेटरों को इसकी नियमित आपूर्ति बनाए रखना है। यही समस्या बायो-सीएनजी संयंत्रों जैसी उच्च मूल्य श्रृंखला वाली गतिविधियों में भी है।

आगे की राह

इस योजना के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने हेतु ग्रामीण समुदायों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है, जो बायोगैस संयंत्रों के संचालन को सुगम बनाने हेतु मवेशियों के गोबर को जमा करते हैं। ये संयंत्र आमतौर पर पारंपरिक एलपीजी गैस सिलेंडर की तुलना में कम लागत पर रसोई गैस की आपूर्ति करते हैं।

कचरे से ऊर्जा- केस स्टडी

पंजाब के होशियारपुर में लाम्बरा कांगड़ी बहुउद्देशीय सहकारी सेवा सोसायटी द्वारा यह कार्य सफलतापूर्वक किया जा रहा है। यह सोसायटी मवेशियों के गोबर और अन्य जैविक अपशिष्ट को इकट्ठा कर इसका उपयोग बायोगैस संयंत्र चलाने के लिये करती है और इस तरह निर्मित कुकिंग गैस को सोसायटी के सदस्यों को उपलब्ध कराया जाता है।

इसी तरह सूरत (गुजरात) में ग्राम विकास ट्रस्ट द्वारा गोबर बैंक पहल की शुरुआत की गई है, जहाँ पर सामुदायिक बायोगैस संयंत्र को चलाने के लिये सदस्यों द्वारा ताज़ा गोबर लाया जाता है। सदस्यों द्वारा लाए गए गोबर को तौलकर उनके पासबुक में एंट्री कर दी जाती हैं।

इसके बदले में उन्हें सस्ते दामों पर कुकिंग गैस के साथ ही बायोगैस संयंत्र के अवशेष के रूप में जैविक घोल (बायोस्लरी) भी उपलब्ध करा दिया जाता है, जिसका वर्मी कंपोस्ट और जैविक खेती के लिये उपयोग किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अपशिष्ट से आय सुनिश्चित करने हेतु सभी हितधारकों और क्षेत्रों की भागीदारी की जरूरत होगी। साथ ही निजी क्षेत्र और स्थानीय उद्यमियों के निवेश की जरूरत होगी। डंपिंग साइटों और लैंडफिल में जाने वाले पशुओं के जैविक अपशिष्ट का लाभ उठाने के लिये पंचायतों और ग्रामीण समुदायों को प्रमुख भूमिका निभानी होंगी। अनौपचारिक स्वच्छता सेवा प्रदाताओं को प्रशिक्षण और उन्हें लाइसेंस देकर इस व्यवस्था में एकीकृत किया जा सकता है।

उचित नीतियों और व्यवहारों द्वारा इस क्षेत्र में विकास के अवसरों में बढ़ाया जा सकता है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय, दीर्घकालिक आजीविका सुरक्षा और गाँवों में अधिक स्वच्छता सुनिश्चित की जा सकेगी।

बायोगैस संयंत्र लगवाने के लिए आप मोबाइल नंबर 7577888457 पर संपर्क कर सकते हैं।

जानें क्या है
सेक्सड सीमन

कभी आर्टिफीशियल इंसेमिनेशन (एआई) की तकनीक ने एनिमल ब्रीडिंग का परिदृश्य ही बदल दिया था, उसी तरह आने वाले समय में ईटीटी और सेक्सड सीमन टेक्नोलॉजी भी एनिमल ब्रीडिंग के क्षेत्र में गेम चेंजर साबित होगी। आज महँगी और जटिल लगने वाली ये टेक्नोलॉजी कल एआई की तरह ही एनिमल ब्रीडिंग का रोजमर्रा का हिस्सा होंगी।

एम्ब्रीयो ट्रांसफर टेक्नोलॉजी (ईटीटी) और सेक्सड सीमन टेक्नोलॉजी ये दो नई तकनीकें एनिमल ब्रीडिंग के क्षेत्र में तेजी से आगे आ रही हैं। जिस तरह कभी आर्टिफीशियल इंसेमिनेशन (एआइ) की तकनीक ने एनिमल ब्रीडिंग का परिदृश्य ही बदल दिया था, उसी तरह आने वाले समय में ईटीटी और सेक्सड सीमन टेक्नोलॉजी भी एनिमल ब्रीडिंग के क्षेत्र में गेम चेंजर साबित होगी। आज महँगी और जटिल लगने वाली ये टेक्नोलॉजी कल एआई की तरह ही एनिमल ब्रीडिंग का रोजमर्रा का हिस्सा होंगी।

क्या है सेक्सड सीमन

सामान्य सीमन में एक्स व वाई दोनों ही तरह के क्रोमोजोम को कैरी करने वाले स्पर्म होते हैं। यानी एक ही सीमन सैंपल में कुछ स्पर्म एक्स क्रोमोसोम वाले होते हैं तथा कुछ स्पर्म क्रोमोसोम वाई वाले होते हैं। ऐसे सीमन से एआई करने पर यदि एक्स क्रोमोसोम वाला स्पर्म अंडे को फर्टिलाइज करता है, तो बछिया पैदा होती है और यदि वाई क्रोमोसोम वाला क्रोमोसोम अंडे को फर्टिलाइज करता है, तो बछड़ा पैदा होता है।

सामान्य सीमन से इतर सेक्सड सीमन में सिर्फ एक ही तरह के क्रोमोजोम (एक्स या वाई) को कैरी करने वाले स्पर्म होते हैं। यानी एक सीमन सैंपल में सभी स्पर्म वाई क्रोमोसोम कैरी करने वाले होते हैं या सभी स्पर्म एक्स क्रोमोसोम कैरी करने वाले होते हैं। एक्स क्रोमोसोम वाले सेक्सड सीमन से एआई करने पर बछिया पैदा होती तथा वाई क्रोमोसोम वाले सेक्सड सीमन से एआई करने पर बछड़ा पैदा होता है। बाजार में उपलब्ध सेक्सड सीमन से एआई करने पर सफलता की दर 90 प्रतिशत रहती है।

क्या है टेक्नोलॉजी

वर्तमान में व्यावसायिक स्तर पर सेक्सड सीमन उत्पादन के लिए फ्लो साईटोमेट्री ही एकमात्र मान्यता प्राप्त तकनीक है। एक्स या वाई कैरी करने वाले क्रोमोसोम आकार, प्रकार तथा व्यवहार में सामान होते हैं। इसलिए इन्हें पहचान कर अलग कर पाना मुश्किल होता है। एक्स या वाई कैरी करने वाले क्रोमोसोम में एकमात्र बड़ा फर्क यह होता है की एक्स क्रोमोसोम में वाई क्रोमोसोम के मुकाबले लगभग 4 प्रतिशत अधिक डीएनए होता है। डीएनए की मात्रा में फर्क के आधार पर ही फ्लो साईटोमेट्री तकनीक के द्वारा एक्स और वाई क्रोमोसोम वाले स्पर्मस को पहचान कर अलग किया जाता है।

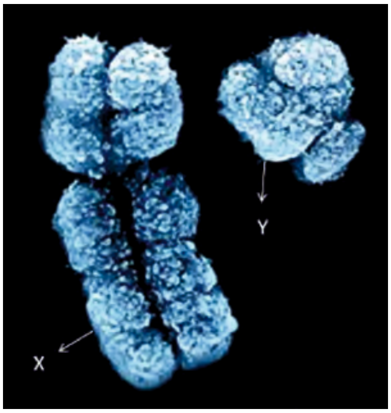

इस तकनीक में स्पर्मस को एक डाई से स्टेन किया जाता है, जो सीधे जाकर डीएनए से बाइन्ड हो जाती है। अब इसे

फ्लो साईटोमीटर से गुजारते हैं। यहाँ इन स्टेन किये हुए स्पर्मस पर लेजर लाइट डाली जाती है। डीएनए की मात्रा अधिक होने के कारण एक्स क्रोमोसोम वाई क्रोमोसोम के मुकाबले ज्यादा ब्राइट ग्लो करते हैं। कंप्यूटर इसी ग्लो के आधार पर ज्यादा ब्राइट ग्लो करने वाले एक्स क्रोमोसोमस को +ve चार्ज तथा कम ग्लो करने वाले वाई क्रोमोसोमस को -ve चार्ज से टेग करता है। अब इन स्पर्मस को इलेक्ट्रो मेग्नेटिक फील्ड से गुजारते हैं, जहाँ एक्स और वाई क्रोमोसोमस अपने चार्ज के आधार पर अलग अलग टयूब्स में इकट्ठा हो जाते हैं।

विश्व में इतिहास

सेक्सड सीमन के व्यावसायिक उत्पादन की तकनीक सर्वप्रथम अमेरिका के लिवरपूल स्थित प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने विकसित की थी। यूरोप और अमेरिका में सेक्सड सीमन का व्यावसायिक उत्पादन और उपयोग 21वी सदी की शुरुआत में ही प्रारंभ हो गया था। वर्तमान में दो कम्पनियाँ सेक्सिंग टेक्नोलॉजीस और एबीएस ग्लोबल विश्व भर में सेक्सड सीमन का उत्पादन कर डेरी फार्मर्स को उपलब्ध करा रही हैं।

भारत में इतिहास

भारत में सेक्सड सीमन का उत्पादन सबसे पहले पश्चिम बंगाल गौ संपदा विकास संस्थान ने 2009 में शुरू किया था। संस्था ने आरकेवीवाई प्रोजेक्ट के तहत 2.9 करोड़ की लागत से हरिनघाटा में बीडी इन्फ्लक्स हाई स्पीड सेल सॉर्टर स्थापित किया था। यहाँ उत्पादित सेक्सड सीमन से पहला बछड़ा 1 जनवरी 2011 को पैदा हुआ था, जिसका नाम श्रेयश था। श्रेयश भारत में उत्पादित होने वाले सेक्सड सीमन से पैदा होने वाला संभवतः पहला बछड़ा था।

वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान में कई राज्यों के लाइवस्टोक डेवलपमेंट बोर्ड विदेशों से सेक्सड सीमन आयात कर किसानों को सब्सिडी पर उपलब्ध करा रहे हैं। सब्सिडी के बाद किसानों को यह सीमन स्ट्रा 1000 रुपए के आस पास में मिल रहा है। इसके अलावा, प्रोग्रेसिव डेरी फार्मर्स एसोसिएशन पंजाब तथा कई गैर सरकारी संस्थायें(एनजीओ) भी अपने क्षेत्र के किसानों को आयातित सेक्सड सीमन उपलब्ध करा रही हैं। सीमन आयात करने की प्रक्रिया काफी जटिल है। इसकी अनुमति मिलने में ही कई बार एक से दो साल का समय लग जाता है।

मेक इन इंडिया

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मेक इन इंडिया के आवाहन के बाद हमारे देश में सेक्सड सीमन का उत्पादन शुरू करने हेतु चौतरफा प्रयास शुरू हो गए हैं। देश के कई राज्यों ने अपने यहाँ सेक्सड सीमन का उत्पादन करने वाली लैब स्थापित करने हेतु ग्लोबल टेंडर जारी किये हैं। राज्य सरकारों के अलावा BIAF, JK TRUST, NDDB, AMUL जैंसी संस्थायें भी अपने यहाँ सेक्सड सीमन का व्यवसायिक उत्पादन शुरू करने की दिशा में तेजी से कार्य कर रही हैं। एबीएस इंडिया ने चितले डेरी के साथ जॉइंट वेंचर में पूना के निकट सेक्सड सीमन का उत्पादन शुरू भी कर दिया है। यहाँ गाय की देशी नस्लों जैंसे गिर, साहीवाल के साथ ही मुर्रा भैंस के सेक्सड सीमन का भी उत्पादन किया जा रहा है।

सेक्सड सीमन के लाभ

कृषि के यंत्रीकरण के बाद हमारे देश में बैलों की उपयोगिता बहुत ही कम रह गई है। आज के परिदृश्य में किसान के लिए बैल पालना अप्रासंगिक को गया है। आंकड़ो के अनुसार इस समय देश में 84 मिलियन नर गौवंशीय पशु हैं, जिनका कोई सार्थक उपयोग नहीं है। ऐसी स्थिति में किसान अपनी गाय से बछिया ही चाहता है। सेक्सड सीमन डेरी उद्योग में अवांछित हो चुके नर पशुओं की संख्या को नियंत्रित करने में बहुत मदद करेगा।

सेक्सड सीमन के उपयोग से किसानों को नर पशुओं के रख रखाव का खर्च नहीं उठाना पड़ेगा, जिससे उनकी आय में इजाफा होगा। अपनी ही डेरी में बछियें तैयार होने से किसान को बाहर से गायें नहीं खरीदना पड़ेगी। बछिया का आकार बछड़े से कुछ छोटा होता है, इसलिए बछिया के प्रसव के समय डिस्टोकिया की संभावना बहुत कम रहती है।

सेक्सड सीमन की सीमायें

फिलहाल सेक्सड सीमन की कीमत बहुत अधिक है, इसकी कीमत ही इसकी सबसे बड़ी कमी है। देश के विभिन्न भागों में सेक्सड सीमन के स्ट्रॉ की कीमत 1200 से 2000 रुपए है। भारत के गरीब किसान के लिए यह महंगा है, दूसरा यदि एआई सक्सेस नहीं हुई, तो किसान को दुगना नुकसान उठाना पड़ता है। माना जा रहा है कि जैसे-जैसे देश में इसका उत्पादन और मांग बढ़ेगी, इसकी कीमतों में भी कमी आयेगी। सेक्सड सीमन के उपयोग से बछिया होने की संभावना 90 प्रतिशत रहती है बछड़ा होने की 10 प्रतिशत संभावना फिर भी रह जाती है।

भ्रांतियाँ

सेक्सड सीमन के स्ट्रा में मौजूद सीमन में स्पर्मस की संख्या सामान्य स्ट्रा में मौजूद सीमन में स्पर्मस की संख्या से काफी कम होती है। सामान्य स्ट्रा में मौजूद सीमन में स्पर्मस की संख्या 20 मिलियन होती है वहीं सेक्सड सीमन के स्ट्रा में मौजूद सीमन में स्पर्मस की संख्या 2 मिलियन होती है। इसलिए माना जाता है कि सेक्सड सीमन के उपयोग से गर्भाधान की संभावना सामान्य सीमन के मुकाबले आधी रहती है। भारत में सेक्सड सीमन का उत्पादन करने वाली एक मात्र कंपनी एबीएस इंडिया के प्रोडक्शन मैनेजर डॉ राहुल गुप्ता का कहना है कि यह एक भ्रांति है, सेक्सड सीमन के उपयोग से गर्भाधान की संभावना सामान्य सीमन के मुकाबले मात्र

5 से 10 प्रतिशत ही कम रहती है।

अच्छे परिणामों के लिए

एबीएस इंडिया के डॉ राहुल गुप्ता की सलाह है कि सेक्सड सीमन से अच्छे परिणाम पाने के लिए इसका उपयोग बछियों और पहली या दूसरी ब्यांत के पशुओं में करना चाहिये। गर्भाधान में मौसम की बहुत बड़ी भूमिका होती है, बहुत गर्म या बहुत आर्द्रता वाला मौसम गर्भाधान के लिए अनुकूल नहीं होता। अतः अच्छे परिणामों के लिए अक्टूबर और मार्च के बीच ही गर्भाधान का प्रयास करना चाहिये। सेक्सड सीमन के साथ उपलब्ध करवाई गई लीफलेट में दिये गए दिशा निर्देशों का पूरी तरह पालन करना चाहिये। □□

साभारः पशु संदेश

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अतः आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-

दूरभाष: 91-120-7100201

पशु पालकों की गम्भीर समस्या

दुधारू पशुओं में बांझपन

-मनोज कुमार[1], के.पी.एस.सांगू[1], राजबीर सिंह[1] एवं सुखदेव सिंह[2]

बांझपन का नाम सुनकर ही पशुपालकों के दिमाग में एक भय सा उत्पन्न हो जाता है। बांझपन से आशय है कि हमारे दुधारू पशु को एक वर्ष में एक बच्चा देना चाहिये या यों कहें कि पशु को एक साल के अन्दर ब्याह जाना चाहिये और ये तभी संभव है, जब पशु ब्याने के 45-75 दिन के बीच गाभिन हो जाये और गर्भ रूक जाये। यदि इस समय या अवधि में पशु गर्मी में नहीं आता है, तो हमें मान लेना चाहिये कि हमारा दुधारू पशु (गाय व भैस) बांझपन की तरफ बढ़ रहा हैं।

हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी आय की दृष्टि से अच्छा व्यवसाय है। ये दोनों व्यवसाय एक दूसरे पर पूर्णतया निर्भर हैं। कृषि के बगैर पशुपालन सम्भव नहीं है और पशुपालन के बिना कृषि। सच कहें तो ये दोनों एक दूसरे की रीढ़ हैं।

हमारा देश भारत दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में प्रथम स्थान पर है, लेकिन यदि प्रति पशु दुग्ध उत्पादन देखा जाये, तो विदेशों की तुलना में काफी कम हैं। वैसे तो पशु संख्या के आधार पर हमारे देश मे सबसे अधिक पशु पाले जाते है। प्रति पशु दुग्ध उत्पादन कम होने के कई कारण हैं। एक तो हमारे देश में अशुद्ध नस्ल के पशु अधिक संख्या में हैं। दूसरा कारण है दुधारू पशुओं में बांझपन।

पशु के बांझ हो जाने के कारण अच्छी नस्ल के पशु भी कत्लखानों में काट दिये जाते है, जिससे न केवल किसानों को भारी आर्थिक क्षति होती है, बल्कि श्रेष्ठ जनन द्रव्य भी नष्ट हो जाता है। इससे दिन प्रतिदिन अच्छे पशुओं की संख्या लगातार घट रही है।

बांझपन-एक गंभीर समस्या

बांझपन का नाम सुनकर ही पशुपालकों के दिमाग में एक भय सा उत्पन्न हो जाता है। बांझपन से आशय है कि हमारे दुधारू पशु को एक वर्ष में एक बच्चा देना चाहिये या यों कहें कि पशु को एक साल के अन्दर ब्याह जाना चाहिये और ये तभी संम्भव है जब पशु ब्याने के 45-75 दिन के बीच गाभिन हो जाये और गर्भ रूक जाये। यदि इस समय या अवधि में पशु गर्मी में नहीं आता है, तो हमें मान लेना चाहिये कि हमारा दुधारू पशु (गाय व भैस) बांझपन की तरफ बढ़ रहा हैं।

बांझपन के लक्षण एवं कारण

कभी-कभी तो पशु गर्मी में तो हर 21 दिन बाद आता है, लेकिन गर्भ नहीं ठहरता है। ये भी बांझपन का एक लक्षण है। दुधारू पशुओं में बांझपन के अनेक कारण हैं। इनमें मुख्य कारण है कि दुधारू पशुओं को आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति न हो पाना, क्योंकि दुधारू पशु के दूध में सभी आवश्यक पोषक तत्व (वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, मेग्नीशियम, आयरन आदि) मौजूद रहते हैं। यदि पशु के शरीर में इन पोषक तत्वों की कमी हो जाती है तो पशुओं में अस्थाई बांझपन आ जाता है।

दूसरा मुख्य कारण है कि पशुओं के पेट में कीड़े हो जाते हैं। कीड़े होने के कारण भी पशुओं में बांझपन आ जाता है। क्योकि जो पोषक तत्व हम अपने पशुओं को खिलाते हैं वे पोषक तत्व कीड़े चूस लेते हैं और पशुओं को उनकी आपूर्ति नहीं हो पाती हैं। तीसरा मुख्य कारण है कि दुधारू पशुओं के लिये हरे चारे की उचित व्यवस्था न होना।

हरे चारे की कमी के कारण भी पशुओं में बांझपन आ जाता है। चूंकि हरे चारे में सभी आवश्यक पोषक तत्व मौजूद रहते हैं, जिससे पशुओं को सभी पोषक तत्व मिल जाते हैं और हरे चारे आसानी से पच भी जाते है। सूखे चारे को पचाने में भी पशु की ऊर्जा अधिक खर्च होती है और इनसे पोषक तत्व भी बहुत कम मात्रा में मिल पाते है। कुछ सूखे चारे जैसे धान की पुआल दुधारू पशुओं को खिलाने से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। इससे दुग्ध उत्पादन में कमी एवं कभी-कभी पशु की पूंछ सूख जाती है, जिससे पशुपालक को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

चौथा मुख्य कारण है कि पशु की ओवरी में सिस्ट बन जाते हैं। सिस्ट बनने के कारण पशु गर्मी में तो नियत समय पर आता है, लेकिन गर्भ नहीं ठहरता है। इस कारण दुधारू पशु बांझपन का शिकार हो जाता हैं।

पांचवा मुख्य कारण है कि पशुओं का उचित व्यायाम न हो पाना। प्रायः देखने में आया है कि कभी-कभी पशु में कोई भी कमी स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती है, लेकिन फिर भी पशु को गर्भ नहीं ठहरता हैं। दुधारू पशुओं में बांझपन के निदान के लिये यदि हम कुछ विशेष सावधानी बरते, तो इस समस्या का निदान हो सकता हैं। इस समस्या के निराकरण के लिये सबसे पहले हमें दुधारू पशुओं के खानपान व रहन सहन पर ध्यान देना होगा। इसके लिये हमें अपने दुधारू पशु को सन्तुलित आहार खिलाने की आवश्यकता है। सन्तुलित आहार पशु के दुग्ध उत्पादन के आधार पर खिलाना चाहिये। दुधारू भैंस को दो लीटर दूध पर 1 किग्रा राशन व गाय को 2.5 लीटर दूध पर 1 किग्रा राशन खिलाना चाहिये। इसके अलावा 1-1.5 किग्रा राशन जीवन निर्वाह के लिये देना चाहिये। सन्तुलित आहार देने का उचित तरीका अपनाना चाहिये। पशु को दाना खिलाने के लिये सुबह का दाना शाम को और शाम का दाना सुबह को भिगो देना चाहिये।

अधिकतर पशुपालक गाभिन पशु को इसलिए दाना या अच्छा चारा नहीं देते क्योंकि वह दूध नहीं दे रहा होता हैं। दूध से हटने के बाद पशु को सूखे चारे या तूड़ी पर छोड़ देते है। जब कि इस समय पशु को और अधिक अच्छे चारे व दाने की जरूरत हैं, क्योंकि यह वह समय है, जिसमें पशु को अगले ब्यांत के लिये भी तैयार होना है और पेट में पल रहे बछड़े/बछिया का भी भरण पोषण करना है।

पशुओं के पेट में कीड़े होने के मुख्य लक्षण पशुओं की चमड़ी खुरदरी, गोबर में बदबू व पशु का दुग्ध उत्पादन पशु की क्षमता के अनुरूप नहीं हो पाता है। पेट में कीड़ों के लिये दुधारू पशु को पशुचिकित्सक की सलाह से पेट के कीड़े मारने की दवा पिला देनी चाहिये और 15-21 दिन के अन्तराल पर दोबारा दवा पिला देनी चाहिये ऐसा करने से पशु के पेट के सभी कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

दुधारू पशु को हरे चारे की आपूर्ति के लिये हरे चारे को इस क्रम में उगाना चाहिये कि वर्ष भर इसकी पूर्ति अच्छे तरीके से होती रहे। इसके लिये हमें सस्यक्रम अपनाने की आवश्यकता पड़ेगी। मई जून माह में मक्का, ज्वार, बाजरा आदि सितम्बर अक्टूबर में बरसीम, सरसों, जई, फरवरी-मार्च माह में मक्का के साथ लोबिया बोया जा सकता हैं। यदि इस तरीके से हम फसलों को बोयेंगे तो एक चारा समाप्त होने से पहले दूसरा चारा तैयार हो जायेगा। इसके लिये हमें दो चीजों की आवश्यकता पड़ेगी एक तो जमीन पर्याप्त हो और दूसरा पानी का साधन अच्छा हो। यदि इनमें किसी भी चीज की कमी है, तो हम सस्य क्रम को नहीं अपना सकते है।

पशुपालकों को ध्यान रखना चाहिये कि ज्वार का हरा चारा बुवाई के बाद जल्दी नहीं खिलाना चाहिये कम अवधि वाले पौधों में ग्लूकोसाइड होता है, जिसे धूरिन भी कहते हैं वह पशु के पेट में जाकर प्रूसिक या हाइड्रोसायनिक अम्ल के रूप में बदल जाता है। ज्वार की बुआई के 30 दिन की उम्र वाले पौधों तथा जमीन की सतह के पास नयी शाखाओं में यह अम्ल बहुत अधिक मात्रा में होता है।

पेडी वाली फसल भी छोटी अवस्था में पशुओं के लिये जहरीली होती है। फसल को फूल लगने के समय काटा जाना चाहिये। ग्लूकोसाइड पत्तियों में तने की अपेक्षा अधिक मात्रा मे होता है। यदि ज्वार की बुवाई के समय नाइट्रोजन वाली उर्वरको

की अधिक मात्रा खेत मे डाल दी जाये, तो कम उम्र वाले पौधों में नाइट्रेट अधिक मात्रा में जमा हो जाता है तथा घूरिन की मात्रा भी बढ़ जाती है। सूडान घास में ग्लूकोसाइड ज्वार की अपेक्षा बहुत कम होता है। 30 दिन के ज्वार के पौधे में ग्लूकोसाइड इतनी अधिक मात्रा में जमा रहती है कि यदि गाय को 4-5 किग्रा हरा चारा खिला दिया जाये, तो उसकी मृत्यु तक हो सकती हैं। ऐसी फसल में जिसमें पानी की कमी रही हो घूरिन की मात्रा बढ़ जाती है।

इसलिये पशुपालको को सलाह दी जाती हैं कि वे फसल की अवस्था (40-45 दिन बुवाई के बाद) को ध्यान में रखकर ही पशुओं को खिलायें। यदि बरसात न हुई हो तो फसल में कम से कम दो पानी लगाने के बाद ही पशुओं को खिलायें, क्योकि पानी लगाने से हाइड्रोसाइनिक अम्ल जड़ों के माध्यम से घुलकर जमीन में चला जाता है।

पशुओं में जेर का फंसना

कभी कभी पशुओं की ओवरी में सिस्ट बन जाते हैं। सिस्ट बनने का मुख्य कारण है कि पशुओं के ब्याने के बाद पशु के गर्भाशय की अच्छे से सफाई न हो पाना। ब्याने के 10-15 दिन बाद पशु छटाव (मैला) डालता है। यदि इस समय ओवरी की सफाई अच्छे से नहीं हो पाती है, तो पशु की ओवरी में मैल रूकने से सिस्ट बन जाते हैं सिस्ट बनने का मुख्य कारण ये भी है कि जब पशु ब्याहता है, तो कभी-कभी बच्चा फस जाता है या पशुओं में जेर रूक जाती हैं। इस स्थिति में पशुपालक किसी भी अनभिज्ञ व्यक्ति को बुलाकर जबरदस्ती बच्चे को बाहर खींच लेता है या जेर को भी जबरदस्ती निकालने की कोशिश करता है, तो इसमें जेर का कुछ टुकड़ा टूटकर अन्दर ही रह जाता है। जेर अन्दर रहने के कारण इसमें अन्दर ही अन्दर सड़न हो जाती है। यदि अधिक मात्रा में जेर रह जाती है, तो सेप्टिक बन जाता है और कम मात्रा में रहने पर सिस्ट बनने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिये पशु जितने आराम से ब्याता है। पशु और पशुपालक के लिये इतना ही लाभकारी है। यदि पशु जेर गिराने में देर करता है, तो पशु को जेर साफ करने की दवा एक्सापार पिलाई जा सकती है। इससे पशु जेर जल्दी ही डाल देगा और उसके गर्भाशय की सफाई अच्छी तरीके से हो जायेगी।

प्रायः ऐसा देखा गया है कि जिन पशुओं का व्यायाम नहीं होता हैं। उन पशुओं में भी बांझपन के लक्षण आ जाते हैं। इसलिये दुधारू पशुओं के लिये व्यायाम बहुत जरूरी है। प्रायः ऐसा देखने में आया है कि जो बांझ पशुओ को पशुपालक छुट्टा छोड़ देता है कुछ समय पश्चात् वे अपने आप ही गाभिन हो जाते है और उनका गर्भ भी ठहर जाता है।

व्यायाम के साथ-साथ स्वच्छ व ताजा पानी भी बहुत आवश्यक है। भैसों में गर्मी के महीनों में गर्भ नहीं ठहरता है प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि यदि भैंसों को 3-4 घन्टे ठन्डे पानी में नहलाया या लेटाया जाये, तो इससे भैंसों में सीजनल बांझपन को कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

दुघारू पशुओं में बांझपन का एक मुख्य कारण और है जिन पशुओं के बच्चे मर जाते हैं। उन पशुओं को आक्सीटोसिन इन्जेक्शन लगाकर उनका दूध जबरदस्ती निकाला जाता है। इससे पशु दूध तो दे देता है, लेकिन उनमें बांझपन व कभी-कभी पशु का अबोरशन (बच्चा गिरा देना) भी हो जाता है। इन सबके साथ-साथ दुधारू पशुओं के लिये मिनरल मिक्चर भी बहुत जरूरी हैं। मिनरल मिक्चर से पशुओं में सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति हो जाती है। मिनरल मिक्चर दुधारू पशुओं को 35-40 ग्राम प्रति दिन खिलाना चाहिये। □□

1. सभी शोध छात्र, ए.बी.सी प्रभाग, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, 2. प्रधान वैज्ञानिक, ए.बी.सी प्रभाग, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

एक्सापार
प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु
AYURVET
ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय
● गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
● गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
● गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे
● रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
● ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
EXAPAR
LIQUID
UTERINE CLEANSER & RESTORATIVE
एक्सापार
द्रव
1 लीटर बोतल
500 मि.ली. पैट बोतल
4 बोलस की एक स्ट्रिप

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल हां, अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक।

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. 1 मेरी गाय आठ महीने की गाभिन है। उसे कौन सा तरल कैल्शियम दें? राम भारद्वाज, सोनीपत

उ. 1 कैल्शियम दुधारू पशु का दूध बढ़ाने के लिए दिया जाता है। खनिज मिश्रण पशु को उसके शरीर के रख- रखाव के लिए देते हैं। जब दुधारू पशु दूध देता है, तो लगभग 1.2 ग्राम कैल्शियम प्रति लीटर दूध से बाहर निकलता है। इससे शरीर में कैल्शियम की कमी आ जाती है। पशु का दूध कम हो जाता है व पशु कमजोर हो जाता है। इस कमजोरी से कई बार पशु गरमाता नहीं है व गरमाए तो कृत्रिम गर्भाधान करने के बावजूद उसका गर्भ नहीं ठहरता है। इसी कैल्शियम की कमी को दूर करने के लिए उसे कैल्शियम 100 मिलीलीटर प्रतिदिन देते हैं। जब पशु के ब्यांत में दो महीने रह जाते हैं, तो पशु का दूध सूखा दिया जाता है। दूध सूख जाने के कारण कैल्शियम पशु के शरीर में रहता है, इसलिए उसे कैल्शियम की जरूरत नहीं पड़ती है। इस समय पशु को खनिज मिश्रण की जरूरत होती है। इसके खनिज व विटामिन पशु को स्वस्थ रखने के लिए चाहिए। अब आपके पशु के शरीर से कैल्शियम नहीं निकल रही है, तो उसे कैल्शियम देने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप अपने पशु को केवल खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। अगर इस समय आप अपने पशु को तरल कैल्शियम देंगे, तो उसके शरीर (खून) में कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाती है, इससे पशु को अपने शरीर में कैल्शियम बनाने की जरूरत नहीं पड़ती व उसके अपने शरीर में कैल्शियम बनाने की प्रक्रिया बंद हो जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि जब पशु का ब्यांत होता है, तो पशु के शरीर में कैल्शियम बनाने की प्रक्रिया बंद होने की वजह से पशु में कैल्शियम की कमी हो जाती है। इससे वह बैठ जाता है व उसे मिल्क फीवर (दुग्ध ज्वर) हो जाता है। इसमें अगर पशु का ठीक समय पर इलाज हो जाए तो वह बच जाता है, परंतु इलाज में देरी पशु के लिए हानिकारक भी हो सकती है। अभी आप अपने पशु को आयुमिन वी-5 खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। लैक्टेड की एक बोतल ब्यांत से पहले तथा दूसरी बोतल ब्याने के बाद 6 से 18 घंटे के भीतर दें, तो मिल्क फीवर रोग होने की संभावना को कम किया जा सकता है। बाद में आप कैलधन-वी कैल्शियम शुरू कर दें। आयुमिन वी-5 के अलावा आप अपने पशु को पेट के कीड़ों की दवाई दें और पशु आहार बंद कर उसे दलिया शुरू कर दें।

प्र. 2 मैंने अपनी भैंस का कृत्रिम गर्भाधान 20 दिन पहले करवाया था। आज वह खा-पी नहीं रही है। क्या करें?

सुरेश, मोदीनगर

उ. कृत्रिम गर्भाधान से पशु के खाने-पीने का कोई संबंध नहीं है। हां, गरमाने के दौरान पशु का खाना पीना 1-2 दिन के लिए कम हो जाता है, जो यह लक्षण खत्म होने के बाद अपने आप सामान्य हो जाता है। अभी आपका पशु खा-पी नहीं रहा है। आप उसका परीक्षण पशु चिकित्सक से करवाएं। अगर यह बुखार की वजह से है, आपके पशु का बुखार का इलाज होगा, परंतु अगर आपके पशु को बुखार नहीं है, तो हो सकता है कि आपका पशु नेगेटिव एनर्जी बैलेंस में है, जिसके लिए उसे शायद नाड़ी में ग्लूकोज चढ़वाना पड़े। इसलिए आप अपने पशु का परीक्षण अतिशीघ्र पशु चिकित्सा अधिकारी से करवाएं। पशुचिकित्सक की सलाह से कीटोरोक देने से भी लाभ होता है।

□□

AYURVET
जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी
रुचामैक्स
दूर करे परेशानी
महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
AYURVET
RUCHAMAX
APPETITE STIMULANT & DIGESTIVE TONIC
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
NOT FOR HUMAN USE
60g Net
15g Net
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
अधिक जानकारी के लिए
टोल फ्री नं० पर मिस्ड कॉल करें
97803 11444

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

खोज खबर

जैविक खेती से बढ़ेगा उत्पादन

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने कहा कि जैविक कृषि किसानों को जीविका प्रदान कर सकती है और ग्रामीण व शहरी लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकती है। मथुरा स्थित पंडित दीन दयाल धाम में राष्ट्रीय जैविक कृषि केन्द्र द्वारा आयोजित जैविक कृषि सम्मेलन को संबोधित करते हुए राधा मोहन सिंह ने कहा कि मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता में सुधार कर जैविक कृषि के माध्यम से लंबी अवधि तक उत्पादन किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2015-16 में मोदी सरकार ने पहल करते हुए परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) शुरू की। 2015-16 से 2018-19 की अवधि के दौरान किसान-समूह द्वारा जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए 1307 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया। पीकेवीवाई, आर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट मिशन (एमओवीसीडी) और वाणिज्य मंत्रालय के अधीनस्थ कृषि प्रसंस्करण एवं निर्यात प्राधिकरण (एपीईडीए) के सफल कार्यान्वयन के साथ, देश में अब तक 23.02 लाख हेक्टेयर क्षेत्र प्रमाणित जैविक खेती के तहत लाया जा चुका है। 2016-17 के दौरान, भारत ने 15 लाख टन जैविक उत्पादों का उत्पादन किया है, जिसमें 3.64 लाख टन उत्पादों का निर्यात किया गया है, जिसका मूल्य 2478 करोड़ रुपये है, जबकि घरेलू बाजार 2000 करोड़ के आस-पास है अगले तीन वर्षों में 10000 करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है।

मोटे अनाज बने पौष्टिक अनाज

भारत सरकार ने मोटे अनाज ज्वार, बाजरा, रागी एवं अन्य अनाजों को पौष्टिक अनाज घोषित कर सभी राज्यों को निर्देश दिया है कि उक्त अनाजों को राज्यों में पौष्टिक अनाजों की श्रेणी में सूचीबद्ध करें। इस सम्बन्ध में केन्द्र सरकार ने गत अप्रैल माह में गजट नोटिफिकेशन जारी कर कहा था कि ज्वार, बाजरा, रागी, काकुन, चीना कोदो, सांवा, कुटकी, कुट्टू तथा चौलाई में पोषण क्षमता बहुत अधिक होती है, यह देश की खाद्य सम्बन्धी पोषण सुरक्षा में विशेष योगदान दे सकती है। इसके साथ ही केन्द्रीय समिति ने देश भर में सार्वजनिक वितरण प्रणाली में इन अनाजों को शामिल करने की सिफारिश भी की है, जिसे मानते हुए केन्द्र ने मोटे अनाजों को पौष्टिक अनाज घोषित किया है।

सीमान्त किसानों की संख्या 10 करोड़ लाख पहुंची

भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग ने वर्ष 2015-16 के कृषि गणना के किसानों द्वारा जोत की संख्या तथा क्षेत्र के आंकड़े सितम्बर 2018 में प्रकाशित किए हैं। ये आंकड़े भविष्य में कृषि की दिशा निर्धारित करने, योजना बनाने तथा आवश्यकता अनुसार उन्हें कार्यान्वित करने में बहुत महत्वपूर्ण साबित होंगे। कृषि गणना कर कार्य वर्ष 1970-71 में पहली बार आरम्भ किया गया था। यह गणना हर पांच वर्ष में की जाती है। वर्ष 2015-16 की गणना नवीं बार की गई थी। कृषि गणना, विश्व कृषि गणना का एक भाग है, जो संयुक्त राष्ट्र संघ की खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा पूरे विश्व में कराया जाता है। कृषि गणना को वर्ष 2015-16 की रिपोर्ट के अनुसार देश की 11.90 प्रतिशत जोत अनुसूचित जातियों, 8.72 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियों, 0.18 प्रतिशत संस्थाओं तथा 79.19 प्रतिशत अन्य किसानों के पास है। यदि कृषि जोत के क्षेत्र के हिसाब से देखें तो अनुसूचित जाति के पास कुल कृषि क्षेत्र का 8.61 प्रतिशत, अनुसूचित जनजातियों के किसानों के पास 11.41 प्रतिशत, संस्थाओं के पास 0.97 प्रतिशत तथा अन्य किसानों के पास 79.03 प्रतिशत क्षेत्र है। वर्ष 1970-71 में जहां एक हेक्टेयर तक जोत रखने वाले सीमान्त किसानों की संख्या

मात्र 362 लाख थी वहीं वर्ष 2015-16 में बढ़कर 998.58 लाख तक पहुंच गई। वर्ष 1970-71 में 1 से 2 हेक्टेयर जोत तक रखने वाले छोटे किसानों की संख्या 134.32 लाख थी, वह भी 2015-16 में बढ़कर 257.77 लाख तक पहुंच गई। 2 से 4 हेक्टेयर जोत रखने वाले किसानों की संख्या में भी पिछले 45 वर्षों में वृद्धि देखी गई है। वर्ष 1970-71 में इनकी संख्या 106.81 लाख थी, जो 2015-16 में बढ़कर 142.61 लाख तक पहुंच गई। मध्य रकबा 4 से 10 हेक्टेयर में जोत करने वाले किसान, जो वर्ष 1970-71 में 79.32 लाख थे, वह वर्ष 2015-16 में घटकर 70.92 लाख रह गये। इसी प्रकार 20 हेक्टेयर से बड़ी जोत रखने वाले किसानों की संख्या में भी कमी आई है। वर्ष 1970-71 में इनकी संख्या 27.66 लाख थी जो वर्ष 2015-16 में घटकर 8.31 लाख ही रह गई है। पिछले पांच वर्षों में ही इसमें 1.42 लाख की कमी आई है। देश में एक हेक्टेयर से कम कृषि भूमि वाले 998.58 लाख किसान हैं, जबकि इनकी संख्या वर्ष 2010-11 में 928.26 लाख ही थी। इनमें पांच वर्षों में 70.30 लाख की वृद्धि हुई है। इसमें प्रतिवर्ष 14.06 लाख किसानों की वृद्धि होती चली जा रही है। पिछले 45 वर्षों में कृषि जोत के क्षेत्र में 50.36 लाख हेक्टेयर की कमी आई है। वहीं वर्ष 1970-71 में जहां एक हेक्टेयर से कम जोत का क्षेत्र जो कुल क्षेत्र का 9.0 प्रतिशत था, वह 2015-16 में बढ़कर 24.15 प्रतिशत हो गया है। देश की औसत जोत जो वर्ष 1970-71 में 2.38 हेक्टेयर थी वह घटकर 2015-16 में 1.08 हेक्टेयर रह गई।

तेजराम की जैविक लहसुन भरेगी स्वीडन की उड़ान

उज्जैन जिले के ग्राम रुनिजा के श्री तेजराम नागर की जैविक

खेती की कोशिशों को तब पंख लग गए, जब पिछले दिनों उनकी गराडू, लहसुन, मिर्च और अदरक की जैविक फसल को देखने उनके फार्म हाउस पर स्वीडन के दो वैज्ञानिक रुनिजा आए और उन्होंने यहां की जैविक लहसुन को स्वीडन द्वारा खरीदने की बात कही। तेजराम ग्वालियर से एमएससी (एग्रोनॉमी) उत्तीर्ण हैं। उज्जैन जिले का यह क्षेत्र लहसुन उत्पादक है, जबकि स्वीडन और अन्य देशों में जैविक लहसुन की बहुत मांग है लहसुन के निर्यात को लेकर जल्द ही बड़ी परियोजना आकार ले सकती है। श्री तेजराम ने बताया कि यहां से स्वीडन को प्रतिदिन 1000 क्विंटल लहसुन की आपूर्ति की जाएगी। इसके लिए तैयारियां की जा रही है, जिसमें किसी बड़े व्यवसायी के माध्यम से अनुबंध पश्चात् किसानों से लहसुन खरीदी जाएगी। इससे किसानों को भी लहसुन का अच्छा मूल्य मिल सकेगा। स्वीडन के वैज्ञानिकों ने यह शर्त रखी है कि वे उसी जमीन की लहसुन खरीदेंगे जहाँ मूंगफली नहीं बोई जाती हो। इसके अलावा उन्होंने कुछ और मापदंड भी तय किए थे।

फूलों की खेती से हुए मालामाल

बैतूल जिले के आठनेर विकासखंड के गुनखेड़ गांव के कृषक श्री हनुमंतराव के पास लगभग ढाई हेक्टेयर जमीन है। पूर्व में वह परंपरागत रूप से खेती करते

थे। 2002 से उद्यानिकी विभाग के संपर्क में आने पर एक चौथाई एकड़ जमीन (1000 वर्गमीटर) पर सेवंती के फूलों की खेती प्रारंभ की। पहले ही वर्ष में हनुमंतराव की मेहनत रंग लाई और मात्र 3000 रुपए खर्च करके 55,000 रुपए की शुद्ध आय प्राप्त हुई। सेवंती के फूलों से होने वाले इस लाभ से प्रोत्साहित होकर हनुमंतराव ने अगले वर्ष इसके दुगने क्षेत्र में सेवंती के फूलों की खेती की। अगले वर्ष भी फूलों की खेती से आशातीत लाभ मिलने से प्रोत्साहित होकर हनुमंतराव वर्ष दर वर्ष फूलों की खेती का क्षेत्र बढ़ाते रहे और वर्तमान में लगभग 2.5 एकड़ जमीन में सेवंती, रजनीगंधा, ग्लेडियोलस, गेंदा, डेजी एवं अन्य फूलों की खेती का लाभ कमा रहे हैं। नई पीढ़ी के हनुमंतराव नई तकनीकी को अपनाने में भी पीछे नहीं रहे। वर्तमान में सेवंती एवं अन्य फूलों की खेती से 2.5 एकड़ जमीन पर उन्हें प्रतिवर्ष 7.5 लाख से 8 लाख रुपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा है। उनकी खेती को देखते हुए उद्यानिकी विभाग द्वारा वर्ष 2016-17 में उन्हें हॉलैंड-नीदरलैंड की विदेश यात्रा पर भी भेजा, जहां से फूलों की खेती एवं विपणन के नए गुर सीख कर आये हनुमंतराव नई ऊर्जा से फूलों की खेती में लग गए हैं।

□□

आयुर्वेट डेस्क

कम पशुओं की डेरी है आसान और फायेदमंद, जानिए कैसे

पिछले 20 वर्षों से भारत विश्व में सबसे अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाला देश बना हुआ है। डेरी व्यवसाय छोटे व बड़े स्तर दोनों पर सबसे ज्यादा विस्तार में फैला हुआ व्यवसाय है। करीब सात करोड़ ग्रामीण किसान परिवार डेरी व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। दूध उत्पादन व्यावसायिक या छोटे स्तर पर पशुपालकों की आर्थिक मदद करता है।

डेरी व्यवसाय को शुरू करने से पहले पशुपालक यही सोचते हैं कि ज्यादा पशु होंगे तो ज्यादा दूध उत्पादन होगा, लेकिन आपको बता दें डेरी में पशुओं का उचित प्रबंधन, दूध प्रसंस्करण और अच्छी तरह मार्केटिंग करके कम पशुओं से भी ज्यादा उत्पादन किया जा सकता है।

मेरठ स्थित केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. राजेंद्र प्रसाद की माने तो डेरी शुरू करने से पहले किसान को दूध की मार्केटिंग की योजना बनानी चाहिए। दूध बिकेगा तभी किसान को फायदा होगा। मेरठ में कई ऐसे किसान हैं, जो दूध उत्पादन के साथ उसकी पैकेज़िंग करके अपने ब्रांड से बाजार में अच्छे दामों में बेच रहे हैं। अगर डेरी किसानों के पास तकनीकी ज्ञान है, तो इस व्यवसाय से अच्छा मुनाफा कमा सकते है। किसान पशुओं के खाने-पीने और साफ-सफाई का ध्यान रखें, तो 70 प्रतिशत पशुओं को बीमारी से बचाया जा सकता है। अभी भी छोटे पशुपालक जागरूक नहीं है, इसलिए हम लोग समय-समय पर किसानों को प्रशिक्षित भी करते है।

पिछले 20 वर्षो से भारत विश्व में सबसे अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाला देश बना हुआ है। डेरी व्यवसाय छोटे व बड़े स्तर दोनों पर सबसे ज्यादा विस्तार में फैला हुआ व्यवसाय है। करीब सात करोड़ ग्रामीण किसान परिवार डेरी व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। दूध उत्पादन व्यावसायिक या छोटे स्तर पर पशुपालकों की आर्थिक मदद करता है।

गोरखपुर जिले के रायगंज गाँव में रहने वाले पन्नेलाल यादव ने दो वर्ष पहले दो दुधारू पशुओं से अपने डेरी की शुरूआत की थी। आज उनके पास आठ भैंसे है, जिनसे करीब 50 से 60 लीटर दूध का उत्पादन होता है। पन्नेलाल बताते हैं, "जितना दूध होता है उसको खुद शहर में बेचने जाते है। अगर बिचौलियों को देंगे, तो लागत भी नहीं निकल पाएगी।"

पन्नेलाल अपने पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए समय से टीकाकरण, हर तीन महीने में पेट के कीड़े की दवा और पशुओं के बाड़े में साफ-सफाई का खासा ध्यान रखते है।" जब पशुओं का दूध दोहते है, तो उनके थनों को और अपने हाथों को अच्छी तरह साफ करते है, ताकि थनैला न हो। इसके अलावा, पशुओं को संतुलित आहार देते है, ताकि दूध की गुणवत्ता अच्छी रहे।"

पन्नेलाल यादव बताते हैं कि डेरी किसानों के लिए सरकार भी कई योजनाएं चला रही है। डेरी फार्म को बनाने से लेकर दूध निकालने और रखने के उन्नत उपकरण तक हर सुविधा उपलब्ध कराने के लिए मोदी सरकार ने डेरी उद्यमिता विकास योजना (डीईडीएस) शुरू की है। इस योजना के तहत डेरी किसानों को सब्सिडी दी जाती है। किसान दो पशुओं से भी डेरी शुरू कर सकता है। अगर आप 2 दुधारू पशु वाली डेरी यूनिट शुरू करते हैं, तो आपके प्रोजेक्ट की लागत लगभग 1.40 लाख रुपये होगी। इसमें आपको 35 हजार रुपये तक की सब्सिडी मिल सकती है। अगर आप एससी/एसटी श्रेणी में आते हैं, तो आपको दो पशु वाली डेरी पर 46,600 रुपये की सब्सिडी मिल सकती है। इसके लिए आप अपने जिले के नाबार्ड के नोडल

अधिकारी या जिला मुख्य पशुचिकित्साधिकारी से भी संपर्क कर सकते है।

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान के डेरी प्रोजेक्ट ऑफिसर डी.के अरोड़ा बताते हैं कि ''संस्थान में समय-समय पर किसानों को डेरी फार्म शुरु करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें कोई भी किसान हिस्सा ले सकता है। यह प्रशिक्षण छः दिन का होता है। अभी तक कई राज्यों से किसान प्रशिक्षण लेकर छोटे एवं बड़े स्तर पर डेरी का व्यवसाय शुरु कर चुके है।''

वह आगे बताते हैं, ''कम पशुओं से डेरी को शुरू करना चाहिए। अगर किसान शुरू में कम पशु पालता है, तो उसको पता चल जाता है कि एक पशु पर कितनी लागत लग रही है। कितना उससे मुनाफा हो पा रहा है। आगे वो पशुओं की संख्या को बढ़ा सकता है। इसके साथ पशुओं में एआई (कृत्रिम गर्भाधान) का ज्यादा ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि अगर गाय-भैंस का एक मदचक्र छूट जाए, तो डेरी व्यवसाय में काफी नुकसान होता है। इसलिए सही समय पर और अच्छी नस्ल का सीमन का प्रयोग करना चाहिए।''

उत्तर प्रदेश सरकार जल्द ला रही दो पशु की डेरी

दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय डेरी परियोजना शुरू करने जा रही है। उत्तर प्रदेश पशुपालन विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. अरविंद सिंह बताते हैं, ''पहले छः पशुओं की योजना सरकार ला रही थी, लेकिन इसमें संशोधन किया गया है। अब इस योजना में दो पशु (एक भैंस और एक पड़िया) को रखा गया है। जल्द ही इस योजना से छोटे किसानों को लाभ मिलेगा।''

इस योजना का उद्देश्य छोटी-छोटी इकाईयों से दूध उत्पादन बढ़ाने के साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार के मौके उपलब्ध कराना है।

डेरी के लिए यहां से खरीदे पशु

अब आपको डेरी के लिए गाय-भैंस खरीदने के लिए इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं है। भारत सरकार द्वारा डेरी फार्म के करोबार को बढ़ावा देने के लिए कई तरह की मदद कर रही है। भारत सरकार ने ई-पशुहाट पोर्टल भी बनाया हैं, जिसमें आपको कई नस्लों की भैंसों या गायों की जानकारी मिल जाएगी। इतना ही नहीं आप चाहे तो इन्हें इस पोर्टल के जरिए खरीद और बेच भी सकते है।

डेरी व्यवसाय को शुरू करने के लिए ध्यान देने वाली बातें

- पांच या छः पशुओं से आप अपने डेरी व्यवसाय की शुरुआत कर सकते है। इस व्यवसाय को शुरु करने से पहले प्रशिक्षण जरुर लें और अगर आपके आपके क्षेत्र में डेरी फार्म हो, तो उसका निरीक्षण जरूर करें।
- चारागाह की समस्या हर जगह है इसलिए चारे के खर्च को कम करने के लिए डेरी के पास की ही जमीन पर ही चारा उगाकर पशुओं को खिला सकते है। इसके साथ ही आप साइलेज भी तैयार कर सकते है।

- व्यावसायिक डेरी फार्म के लिए अच्छी गुणवत्ता और अच्छी संरचना वाले पशुओं का चुनाव बहुत जरूरी होता है।
- डेरी व्यवसाय में बछियों की देखभाल बहुत जरूरी है, क्योंकि तीन साल बाद वो दूध देना शुरू कर देती है। अगर सही देखभाल होगी, तो किसान को फायदा होगा।
- इस क्षेत्र में इस बात का जरुर ध्यान रखें कि आपके फार्म में सप्ताह में एक बार पशुचिकित्सक को जरूर बुलाएं।
- इससे अगर कोई पशु किसी बीमारी से ग्रसित होगा, तो उसकी पहचान हो सकेगी और आपको किसी भी प्रकार के आर्थिक नुकसान होने की संभावना नहीं रहेगी।

□□

-आयुर्वेट डेस्क

समन्वित एवं पशुधन आधारित कृषि प्रणाली

-डॉ सुनील राजोरिया[1], डॉ संजय कुमार रेवानी[2] एवं डॉ. सुनील राजोरिया[3]

किसान अपने खेत पर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए समन्वित प्रणाली के अंतर्गत मुख्य फसलों के साथ-साथ कृषि आधारित अन्य घटकों जैसे पशुपालन, कुक्कुट पालन, बत्तख पालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन एंव मशरूम पालन उत्पादन इत्यादि को अपनाकर जोखिम को कम कर देता है।

वर्तमान प्रतिस्पर्धा परिदृश्य में सीमित एवं मंहगे संसाधनों का कुशल उपयोग कर, फसल उत्पादन के साथ अन्य घटकों का समावेश करना आज की व्यावहारिक प्रासंगिकता है। बढ़ते हुए शहरीकरण, एवं जनसंख्या के दबाव के कारण प्रति व्यक्ति भूमि जोत का आकार निरंतर कम होता जा रहा है, इन परिस्थितियों में कोई भी अकेला कृषि व्यवसाय इस श्रेणी के कृषकों की खाद्य एवं घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। किसान अपने खेत पर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए समन्वित प्रणाली के अंतर्गत मुख्य फसलों के साथ-साथ कृषि आधारित अन्य घटकों जैसे पशुपालन, कुक्कुट पालन, बत्तख पालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन एंव मशरूम पालन उत्पादन इत्यादि को अपनाकर जोखिम को कम कर देता है।

यह न केवल नियमित आमदनी एवं रोजगार का जरिया है बल्कि फसल के अवशेष एवं फसल उत्पादन प्रणाली में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध जैवभार का उचित प्रबंधन करके इसके लाभों का पूरा दोहन किया जा सकता है। भविष्य में कृषि में उज्ज्वल संभावनाएं तलाशने एवं खेती की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए उपलब्ध संसाधनों का प्रबंधन एवं उनका समुचित उपयोग अत्यन्त आवश्यक है, जो सिर्फ समन्वित कृषि प्रणाली के अनुसार किया जा सकता है।

समन्वित कृषि प्रणाली के उद्देश्य

आजीविका सुरक्षाः एकीकृत कृषि प्रणाली का मुख्य उद्देश्य परिवार की सभी जरुरतें उस कृषि के द्वारा ही पूरा करना है, जिससे बाजार पर किसान की निर्भरता को कम किया जा सके। किसान परिवार की अनाज, दाल, तेल, दूध, फल, सब्जी, मांस एवं अण्डा आदि की वर्ष भर कितनी जमीन की आवश्यकता है इन सभी चीजों का विशेष ध्यान इस क्रम में रखा जाता है।

पोषाहार सुरक्षाः इस कृषि मंडल में यह भी उद्देश्य होता है कि किसान एवं उसके परिवार को खनिज तत्व एवं विटामिन से भरपूर भोज्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों, जिससे सबका स्वास्थ्य ठीक रहे।

आय में वृद्धिः एकीकृत कृषि प्रणाली का यह भी लक्ष्य है कि उपलब्ध कृषि जोत के विभिन्न घटकों को शामिल करके अधिकतम लाभ लिया जा सके।

गरीबी उन्मूलनः हमारे किसानों की आर्थिक दशा काफी खराब है। किसान पर कर्ज का भार बढ़ता जा रहा है। एक एकीकृत कृषि प्रणाली के द्वारा किसानों के पास जो भी साधन हैं उनका भरपूर उपयोग करके आर्थिक दशा को सुधारा जा सकता है।

रोजगार सृजनः भारत की सबसे प्रमुख समस्या बेरोजगारी की है। एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाकर किसान रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं और अपने परिवार के सदस्यों के अलावा दूसरे किसान भाई को भी रोजगार दे सकते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रोजगार की काफी कमी महसूस की जा रही है। समन्वित कृषि प्रणाली के विविधिकरण एवं सघनीकरण के कारण प्रति इकाई समय प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक कृषि क्रियाओं के जुड़ने से अधिक कृषि मजदूरों की आवश्यकता पड़ने से ग्रामीण युवाओं की बेरोजगारी को काफी कम किया जा सकता है और रोजगार के अवसर पैदा किए जा सकते हैं।

भूमि एवं जल संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोगः एकीकृत कृषि प्रणाली का यह भी उद्देश्य है कि उपलब्ध जोत का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए। इसका मतलब यह है कि किसान भाई किस कृषि व्यवसाय में कितनी भूमि का उपयोग करें कि उससे अधिकतम उत्पादन लिया जा सके। उसी प्रकार जल संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना आवश्यक है। उपलब्ध जल का बहुउपयोग सुनिश्चित करना है, ताकि एक एक बूंद जल का समुचित उपयोग करके अधिक पैदावार प्राप्त की जा सके।

सतत कृषि विकास एवं पर्यावरण सुधार

कृषि का विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें समय-समय पर सुधार की आवश्यकता पड़ती रहती है और सुधार का क्रम जारी रहता है। एकीकृत कृषि प्रणाली द्वारा जो भी नए अनुसंधान हैं, इस संदर्भ में होते रहेंगे, उनको समय-समय पर इसमें शामिल करते रहना और नई समस्याओं का समाधान करना भी एक उद्देश्य है। एकीकृत कृषि प्रणाली के द्वारा पर्यावरण को काफी हद तक सुधारा जा सकता है। इससे पर्यावरण को साफ-सुथरा रखा जा सकता है।

समन्वित कृषि प्रणाली का औचित्य

भारत जैसे विकासशील देश में इस तरह की कृषि प्रणाली को अपनाया जाना विभिन्न कारणों से उचित हैः

बढ़ती जनसंख्या व सिमटती भूमि

- शहरीकरण व लोगों की बढ़ती आमदनी।
- बदलते आहार स्वरूप से खाद्य पदार्थों की बढ़ती हुई मांग।
- घटते चारागाह के कारण फसल उत्पादन में पशुपालन में बढ़ती प्रतिस्पर्धा।
- पर्यावरण पर बढ़ते बोझ को कम करने के लिए।
- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने हेतु।

समन्वित कृषि प्रणाली के लाभ

कूड़े का उचित प्रबंधन एवं ऊर्जा की उपलब्धता

इस कृषि प्रणाली में एक घटक से उत्पन्न अवशेष दूसरे घटक के लिए कच्चे माल का स्रोत बन जाते हैं, जैसे फसलों के उत्पाद या अवशेष पशुओं के चारे में तथा पशुओं का मल-मूत्र फसलों के लिए खाद में प्रयुक्त हो जाता है। पशुओं का विभिन्न कृषि क्रियाओं यथा जुताई, पिसाई, भार-वहन आदि के निष्पादन में भी उपयोग किया जा सकता है।

अतिरिक्त आमदनी व प्राकृतिक संसाधनों का प्रभावी प्रयोग

दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद (दही, घी आदि) के अलावा गायों से प्राप्त मूत्र एवं गोबर का आयुर्वेदिक औषधियों व कीटनाशक के रूप में भी उपयोग कर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। खेती में समाकलित विधियों का प्रयोग करके हम अपने प्राकृतिक संसाधनों को अति दोहन से बचाकर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित कर सकते हैं।

पोषक तत्वों का चक्र

फसलों और पशुओं के बीच परस्पर निर्भरता स्थापित होने से एक के उत्पादन दूसरे के लिए उपयोगी हो जाते हैं, परंतु यह चक्र विभिन्न घटकों की आवश्यकता की आंशिक पूर्ति ही कर सकता है। समाकलित फसल पशु प्रणाली आंशिक रूप से परस्पर निर्भर रहते हुए एक दूसरे के पूरक है।

ऊर्जा उत्पादन के लिए पशु गोबर का प्रभावी उपयोग

गोबर के उपले बनाकर केवल ईंधन की तरह प्रयोग करने की बजाए उसका बायोगैस उत्पादन में उपयोग किया जाना चाहिए जिससे कि गांव में घरेलू(खाना पकाना, रोशनी करना) एवं विभिन्न उद्यमों (चक्की व पंप चलाना) के कार्यों के लिए आवश्यक ऊर्जा आसानी से उपलब्ध होने के साथ उत्तम खाद भी मिल जाती है। गोबर गैस में 55-60 प्रतिशत मीथेन, 30-35 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड व शेष हाइड्रोजन, नाइट्रोजन आदि अन्य गैसें होती है। इसमें से मीथेन को अलग कर संपीड़ित करके परिवहन जैसे कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है। पशुओं के मल-मूत्र को खुला सड़ने देने की बजाय एकदम से गोबर गैस बनाकर प्रयोग करने से ग्रीनहाउस प्रभाव को भी कम किया जा सकता है। □□

1 शिक्षण सहयोगी, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केंद्र (डूंगरपुर), 2. सहायक प्रोफेसर, पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ पशु चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान, जयपुर, 3. शिक्षण एसोसिएट, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केंद्र, डूंगरपुर (राजस्थान)

email: rajoriasunil22@gmail.com

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।

AYURVET™

मैस्टीलेप के फायदे

- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं
- स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक
- थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं

मैस्टीलेप 50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब तथा 125 मि.ली. स्प्रे में भी उपलब्ध है।

मैस्टीलेप

थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर पर संपर्क करें। **1800-123-3734**
सोम-शुक्र प्रातः 9 से 6 बजे तक

विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस-26 नवंबर

यह दिवस प्रतिवर्ष पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने एवं लोगो को जागरूक करने के संदर्भ में सकारात्मक कदम उठाने के लिए 26 नवम्बर को मनाया जाता है। यह दिवस संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम(यूएनपी) के द्वारा आयोजित किया जाता है। पिछले करीब तीन दशकों से ऐसा महसूस किया जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण से जुड़ी हुई है।

विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस के समझौते

मानवीय क्रियाकलापों की वजह से पृथ्वी पर बहुत सारे प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हुआ है। इसी सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए बहुत सारी सरकारों एवं देशों ने इनकी रक्षा एवं उचित दोहन के सन्दर्भ में अनेकों समझौते संपन्न किये हैं। इस तरह के समझौते यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका के देशों में 1910 के दशक से शुरू हुए हैं। वर्तमान में यूरोपीय देशो जैसे जर्मनी में पर्यावरण मुद्दों के सन्दर्भ में नए-नए मानक अपनाए जा रहे हैं जैसे- पारिस्थितिक कर और पर्यावरण की रक्षा के लिए बहुत सारे कार्यकारी कदम एवं उनके विनाश की गतियों को कम करने से जुड़े मानक आदि। इसी तरह मांट्रियल प्रोटोकाल में ओजोन की परत को नष्ट करने वाले पदार्थों के उत्पादन को प्रतिबंधित करने का प्रावधान किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी)

यूएनईपी एक प्राथमिक अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय एजेंसी है, जिसका मूल उद्देश्य पर्यावरणीय परिस्थितियों के सन्दर्भ में न केवल समीक्षा करना है, वल्कि पर्यावरणीय सहयोग को बढ़ावा देना भी है। यह संस्था अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के महत्व और उससे जुड़ी जानकारी के विनिमय में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता हैं।

पर्यावरण संरक्षण के साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था का एकीकरण

पर्यावरणीय सुरक्षा एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था के समन्वित विकास के सन्दर्भ में यह बहुत जरुरी है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक गतिविधियों का संपोषणीय विकास हो। इस सन्दर्भ में पर्यावरणीय मुद्दों पर बहुत सारे कानूनों एवं नियमो का विकास विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन के द्वारा किया गया है। विश्व बैंक के द्वारा पर्यावरणीय मुद्दों पर अनेक रणनीतियों को अपनाया गया है। साथ ही अपने सभी सदस्यों को इस सन्दर्भ में अद्यतन किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं मानवीय गतिविधियों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने पर खासा जोर देती है।

संयुक्त राष्ट्र की ओवरसीज प्राइवेट इन्वेस्टमेंट कारपोरेशन संस्थान ने अपना यह दृष्टिकोण बना लिया है कि मांट्रियल प्रोटोकाल के अन्तर्गत प्रतिबंधित रासायनिक पदार्थों, जोकि ओजोन परत का क्षरण करती हैं के उत्पादन से जुड़ी प्रत्येक गतिविधि और अन्य अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय कार्यक्रमों के विकास की दिशा में बाधक गतिविधियों के किसी भी प्रकार का वित्तीय सहयोग नहीं किया जायेगा।

बहुत सारे पर्यावरण से जुड़े गैर-सरकारी संगठन अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय मुद्दों को विशेषकर विकसित राष्ट्रों के सन्दर्भ में उठाते रहते हैं। साथ ही उनकी जिम्मेदारियों का एहसास भी उन्हें कराते रहते हैं। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठनों ने अपने दफ्तरों की स्थापना की है। जहाँ पर नागरिक समुदाय पर्यावरण से जुड़े अपने मुद्दों एवं समस्याओं को न केवल एक दूसरे से साझा कर सकता है, बल्कि अपनी आवाज़ भी उठा सकता है।

□□

आयुमिन वी5

विटामिन एंव खनिज तत्वों का संपूर्ण मिश्रण

AYURVET

- पशु को स्वस्थ रखने में व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहायक।
- पशु की कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता करे।
- पशु की प्रजनन क्षमता को बढ़ाने में सहायता करे।

पैक

1 कि.ग्रा. पैक, 5 कि.ग्रा. पैक

बकरी पालन-लाभदायक व्यवसाय

कृषि को लाभदायक बनाने के लिए कई सहायक व्यवसाय जैसे पशुपालन, (गाय भैंस आदि), बकरी पालन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन आदि अपनाए जा सकते हैं। इनमें से बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिसे कम लागत, कम पूँजी व अपेक्षाकृत कम जगह में किया जा सकता है। यह किसान को आर्थिक रूप से सुदृढ़ व शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बकरी एक छोटा जानवर है, जिसे सरलतापूर्वक पाला जा सकता है। इन्हें दूध व मांस के लिए भूमिहीन तथा सीमांत कृषकों द्वारा पाला जाता है। बकरी की मेंगनी व मूत्र, जो बिछावन पर एकत्र होते हैं, एक अच्छे खाद की तरह उपयोग में आते हैं। बकरी पालन पर केंद्र व राज्य शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से अनुदान दिया जाता है। सही प्रशिक्षण, दिशा-निर्देश द्वारा इसे लाभदायक व्यवसाय बनाया जा सकता है।

इस व्यवसाय को लाभदायक बनाने के लिए सहकारी संस्था के माध्यम से उसके सदस्यों के रूप में या अपनी स्थिति के अनुसार अकेले इसे अपनाया जा सकता है। इसके कुछ मानक मापदंड हो सकते हैं।

- आर्थिक रूप से स्वावलंबी इकाई के लिए 95 बकरी और 5 बकरे होना चाहिए।
- औसत रूप से एक बकरी के लिए एक वर्गमीटर ढके हुए (कवर्ड) क्षेत्र की जरूरत होती है। इसी प्रकार प्रति बकरी 1.5 वर्गमीटर खुले क्षेत्र की आवश्यकता होती है।
- इस व्यवसाय में मूल्यह्रास (डिप्रिसिएशन) प्रति पशु 15 प्रतिशत, इमारत (बिल्डिंग) पर 10 प्रतिशत और उपकरणों पर 15 प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से निकाला जाता है।
- कमी के समय (लीन पीरियड) प्रति पशु दो किलोग्राम स्थानीय रूप से उपलब्ध दलहनी भूसा प्रतिदिन खिलाया जाना चाहिए। लगभग दो किलोग्राम दाने वाला चारा प्रति पशु दिया जाना चाहिए।
- बकरी के बच्चे को चार व पाँच माह की आयु 200 ग्राम पौष्टिक आहार (कांसंट्रेट्स) प्रति बच्चा और 300 ग्राम प्रति पशु गर्भ के समय से दो माह तक देना चाहिए। इसी प्रकार 500 ग्राम पौष्टिक आहार प्रति बकरा, जनन ऋतु (ब्रीडिंग सीजन) में दिया जाना चाहिए।
- बकरी का मांस कम चिकनाई (फैट) वाला होता है। इससे साफ किया हुआ (ड्रेस्ट मीट) मांस लगभग 44 से 49 प्रतिशत तक मिल जाता है। बकरी का दूध इन दिनों 20 से 25 रुपए प्रति लीटर बिक जाता है। लगभग 100 बकरियों के एक झुंड की देखरेख व साज-संभाल के लिए दो से तीन व्यक्ति पर्याप्त होते हैं। सामान्यतः बकरी के बच्चों की मृत्यु दर (मार्टेलिटी रेट) 10 प्रतिशत होती है।

प्रजनन काल

बकरी एक साल की कम से कम 30 किलोग्राम वजन की हो जाने पर इनका प्रजनन कराया जा सकता है। यह कार्य दो साल में तीन बार कर सकते हैं। एक साल से कम आयु के बकरे को प्रजनन कार्य में नहीं लगाना जाना चाहिए। एक अध्ययन में पाया गया कि इसके लिए 2 से 3 वर्ष की आयु सबसे उपयुक्त होती है।

- प्रति प्रजनन मौसम में एक नर बकरे का उपयोग 20-25 प्रजनन के लिए किया जाता है। यद्यपि आदर्श स्थितियों में एक बकरे का उपयोग साल में 50 से 70 बार तक संभव है। प्रजनन के लिए साल में दो मौसम मार्च से मई और सितंबर से नवंबर उपयुक्त बताए गए हैं। बकरियों में ईस्ट्रस सायकल प्रति 21 दिन का होता है। और 39 से 48 घंटे तक रहता है। बच्चे होने का अंतराल अलग प्रजातियों व किस्मों में आठ से नौ माह रहता है।

□□

छोटा फल, बड़ा फायदा आंवला

आंवला एक ऐसा फल है, जो अपने कई औषधीय गुणों से भरपूर है। यह विटामिन सी, कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, कैरोटीन और विटामिन बी कॉम्पलेक्स का बहुत बड़ा स्रोत है। यह कई पोषक तत्वों या एंटी-ऑक्सीडेंट की कमी को पूरा कर पूरे शरीर को अंदर तक स्वस्थ रखता है।

पौधे का परिचय

श्रेणीः औषधीय

समूह : वनज

वनस्पति का प्रकार : वृक्ष

वैज्ञानिक नाम : एम्ब्लिका ओफ्फिसिनालिस

सामान्य नाम : आंवला

उपयोग

- आंवला अच्छा जिगर टॉनिक माना जाता है।
- फल रक्तस्त्राव, अतिरज, दस्त, दांत दर्द, घाव, बुखार, रक्त की कमी, मिर्गी, पिम्पल्स के इलाज में उपयोगी है।
- फलों के गूदे से प्राप्त फिलेम्बिलन का प्रयोग केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के उपचार में किया जाता है।
- पत्ते ज्वरनाशक और मधुमेह नाशक होते हैं।
- बीज का प्रयोग अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, और मतली में किया जाता है।
- पत्ते नेत्रशोध, सूजन, अपच और पेचिश के इलाज में उपयोगी होते हैं।
- छाल का प्रयोग पीलिया और दस्त में होता है।
- हरे फल अचार को बनाने में प्रयोग किये जाते है।
- विभिन्न प्रकार के उत्पाद जैसे बालों के तेल, डाई, शैम्पू, चेहरे के लिए क्रीम और दंत मंजन जैसे उत्पादों के लिए उद्योगों में आंवला का प्रयोग किया जाता है।

उपयोगी भाग

फल

रासायनिक घटक : फल में विटामिन सी की मात्रा सबसे अधिक (100 ग्राम फल में 700 मिलीग्राम विटामिन सी) होती है। इसमें साइटोकिनिन भी पाया जाता हैं। पौधों में ग्लुकोगाल्लिन, कोरिलागिन, चेबुलार्गिक एसिड और 3.6 दिगालल्लोय्ल ग्लूकोज पाया जाता है।

उत्पादन क्षमता :

- 20-25 टन/हेक्टेयर फल

उत्पति और वितरण

आंवला मूल रूप से उष्णकटिबंधीय दक्षिण पूर्व एशिया, विशेष रूप से मध्य और दक्षिणी भारत में पाया जाने वाला वृक्ष है। भारत के अलावा यह श्रीलंका, मलेशिया और चीन में भी पाया जाता है। यह भारत के पर्णपाती जंगलों में सामान्य रूप से और समुद्र तल से 1350 मीटर की ऊँचाई पर पहाड़ियों में उगता है। वाणिज्यिक रूप से इसकी खेती उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश जैसे उत्तरी राज्यों में की जाती है।

वर्गीकरण विज्ञान, वर्गीकृत

कुल : यूफोरबियेसी, आर्डर : मलपिघीलेस

प्रजातियां : फिलान्थस एम्ब्लिका लिन्न, सिक्का एम्ब्लिका कुज, पी. ओफिसिनालिस गैर्त्न

आकृति विज्ञान, बाह्य स्वरूप

स्वरूप

- आंवला एक पर्णपाती, छोटे या मध्यम आकार का वृक्ष है, जिसकी शाखायें फैली हुई होती है।
- छाल भूरे हरे रंग की होती है।

- शाखायें रोमिल पर्णपाती और 10-20 से.मी. लंबाई की होती है।

पत्तियाँ

- पत्तियाँ युवा अवस्था में हल्के हरे रंग की, चिकनी, संकीर्ण रेखीय और कुंठित होती है।

फूल

- फूल हरे पीले रंग के होते है, जो अक्सर पत्तियों के निचले हिस्से में पाये जाते है।
- फूल दो प्रकार के होते है नर एवं मादा। नर फूल संख्या में बहुत होते है, जबकि मादा फूल कुछ ही होते है।

फल

- फल पीले रंग के जो 1.3-1.6 से.मी. व्यास के मांसल, गोलाकार होते है, जिनमें 6 अस्पष्ट ऊर्ध्वाधर लकीरे होती है।

परिपक्व ऊँचाई

- वृक्ष की ऊँचाई 20-30 फुट होती है।

किस्में/संकर

किस्म : बनारसी

विशेषताएँ

- यह शीघ्र परिपक्व (मध्य अक्टूबर–मध्य नवंबर) होने वाली किस्म है।
- फल बड़े (48 ग्राम) और शीर्ष पर शंक्वाकार होते है।
- परत चिकनी और पीली होती है।
- गूदा सफेद हरा होता है, जिसमें फाइबर की मात्रा 1.4 प्रतिशत होती है।
- फल में परिरक्षक गुण की कमी होती है।
- यह किस्म वाणिज्यिक रूप से अनुकूल नहीं है।

किस्म: कृष्णा

विशेषताएँ

- यह भी शीघ्र परिपक्व (मध्य अक्टूबर-मध्य नवंबर) होने वाली किस्म है।
- फल मध्यम (44.6 ग्राम) और शीर्ष पर शंक्वाकार होते है।
- परत चिकनी, गुलाबी लाल रंग में खूबानी पीली होती है।
- फाइबर की मात्रा (1.4 प्रतिशत) होती है।
- एस्कोर्बिक अम्ल की मात्रा बनारसी की तुलना में कम होती है।
- यह बनारसी से बेहतर किस्म है।

किस्म: एन ए-9

विशेषताएँ

- यह भी शीघ्र परिपक्व किस्मों (मध्य अक्टूबर–मध्य नवंबर) के अंतर्गत आती है।
- यह एक मध्यम सहनशील क्षमता वाली किस्म है।
- फल आकार में बड़े (50.3 ग्राम) और चपटे आयताकार आकार के होते है।
- परत चिकनी पतली व 6-8 भागों में विभाजित रहती है।
- फाइबर कम (0.9 प्रतिशत) होता है, जबकि एस्कार्बिक अम्ल की मात्रा उच्चतम 100 ग्रा. होती है।
- पेक्टिन की मात्रा बनारसी और कृष्णा की तुलना में अधिक होती है।
- कैंडी, जैम और जेली बनाने के लिए यह एक उत्तम किस्म है।

बुवाई का समय

जलवायु

- यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर उगाया जाता है।
- 630-800 मि.मी. वार्षिक वर्षा में इसकी अच्छी पैदावार होती है ।
- युवा पौधों को 3 साल की उम्र तक मई-जून के महीनों के दौरान गर्म हवाओं से और ठंड के दौरान तुषार पाले से सुरक्षित रखना चाहिए।
- परिपक्व पौधे 460 से. उच्च तापमान एवं अति ठंडा तापमान भी सहन कर सकते है।

भूमि

- आंवला को हल्की से भारी मिट्टी में उगाया जा सकता है।
- चूनेदार मिट्टी भी फसल के लिए अनुकूल होती है।
- अच्छी तरह से सूखी, चिकनी बलुई मिट्टी अच्छी उपज के लिए सबसे उपयुक्त होती है।
- इसे मामूली क्षारीय भूमि में उगाया जा सकता है।

मौसम के महीना

बुआई अक्टूबर से जनवरी माह में की जाती है।

बुवाई-विधि

भूमि की तैयारी

- बुवाई से पहले भूमि में अच्छी तरह से हल चला लेना चाहिए।
- 2.5 से.मी. गहरी और 15X15 से.मी. की क्यारियाँ खेत में तैयार की जाती हैं।
- जुताई के समय मिट्टी के साथ FYM मिलाना चाहिए।

फसल पद्धति विवरण

- आम तौर पर यह बीजों के द्वारा लगाया जाता है।
- बीज एक कठोर आवरण से ढ़के हुये होते है इसलिए बीजों द्वारा अंकुरण में कठिनाई होती है।
- बीज को 2-3 दिनों की धूप में पूरी तरह पके हुये फलों को सुखाकर तैयार किया जाता है।
- बीज को 3-4 घंटे के लिए पानी में भिगोकर पहले से तैयार सीड नर्सरी में बो देना चाहिए।
- अत्यधिक सिंचाई व पानी का प्रवेश हानिकारक होता है।

रोपाई

- एक माह पुराना पौधा नर्सरी में पालीथिन थैले में लगाया जाता है। एक साल पुराने पौधे को मानसून के समय पालीथिन के थैले से खेतों में लगाया जाता है।
- अंकुरित पौधों के रोपण से पहले प्रत्येक गड्ढ़े की सतह पर 15 कि.ग्रा. गोबर की खाद और 0.5-1.0 कि.ग्रा. सुपर फाँस्फेट मिट्टी के साथ मिला देना चाहिए।

पौधशाला प्रबंधन

खाद

- युवा पौधों को अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद 15-20 कि.ग्रा. देना चाहिए और परिपक्व वृक्ष को हर साल सितंबर से अक्टूबर के महीने के दौरान 30-40 कि. ग्रा. गोबर की खाद देना चाहिए।
- 30 ग्राम नाइट्रोजन प्रत्येक वर्ष में सितंबर-दिसंबर माह के दौरान प्रत्येक वृक्ष को 10 साल तक देना चाहिए।

- सितंबर से अक्टूबर माह के दौरान प्रत्येक परिपक्व वृक्ष को 1000 ग्राम नाइट्रोजन, 500 ग्राम फास्फोरस और 750 ग्राम पोटाश की पहली खुराक देना चाहिए और फिर अप्रैल-मई के दौरान दुबारा देना चाहिए।
- यदि फलों का परिगलन हो रहा है, तो 0.05-0.06 प्रतिशत बोरान का छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई प्रबंधन

- आंवला पौधों को मानसून के दौरान सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।
- युवा पौधों में, जब तक वे पूरी तरह से स्थापित नही हो जाते हैं, गर्मियों में 15 दिनों के अंतराल पर पानी देना चाहिए।
- उर्वरक देने के तुरंत बाद पौधों की सिंचाई करना चाहिए।
- मानसून के बाद अक्टूबर-दिसंबर में 25-30 ली. पानी प्रत्येक पेड़ को रोज ड्रिप विधि द्वारा दिया जाना चाहिए।
- फूल आने के समय सिंचाई नहीं देनी चाहिए।

संरक्षित-खेती

कटाई तुड़ाई, फसल कटाई का समय

- आंवलों का अंकुर, रोपण के 7-8 वर्षो बाद प्रारंभ होता है, जबकि अंकुरित क्लोन 5 साल बाद आना शुरू हो जाते हैं।
- फल प्रारंभ में हल्के हरे रंग के होते हैं लेकिन परिपक्व होने पर हरे-पीले रंग के हो जाते हैं।
- आंवला फल तुड़ाई के लिए सबसे अच्छा समय फरवरी है। उस समय फल में अधिकतम एस्कोर्बिक अम्ल होता है।
- परिपक्व फल कठोर होते हैं और वे एक कोमल स्पर्श में नहीं गिरते है। इसलिए फलों को तोड़ने के लिए जोरदार तरीके से हिलाने की आवश्यकता होती है।
- लंबे बांस के डंडे में हुक लगाकर फलों की तुड़ाई हो सकती है।

फसल काटने के बाद और मूल्य परिवर्धन

श्रेणीकरण-छटाई

- आकर्षक कीमतों के लिए फलों को उनके आकार के आधार पर अलग-अलग विभाजित किया जाता है।

परिवहन एवं बाजार उपलब्धता

- आयुर्वेट लिमिटेड सम्बन्ध कार्यक्रम के अंतर्गत जड़ी-बूटियों (औषधियों) की खेती करवाता है। इस संबंध में मार्गदर्शन के लिए संपर्क करें: 09910112358

□□

अमित कुमार जैन, सी. मैनेजर, औषधीय विभाग, आयुर्वेट लिमिटेड

शुभकामनाओं के तौर पर गुलदस्ता देने के बजाय किताब दें इस प्रकार की पहल से काफी बदलाव आ सकता है

-माननीय श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत सरकार

नई साल के इस मौके पर जब आप अपने किसी अज़ीज को उपहार देने की सोच रहे हैं तो ऐसी चीज दीजिए जो हमेशा के लिए यादगार बन जाए, बल्कि जो ले उसका ज्ञान बढ़ाएं, दोस्त बन जाए। ऐसा ही दोस्त और ज्ञान का भंडार उपहार हैं पुस्तकें और पत्रिकाएं।

उपहार की बात है, आयुर्वेट आपके साथ है

आयुर्वेट की पत्रिकाएं

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार
प्रति अंक रु. 25, वार्षिक 275

लाइफस्टॉक फ्यूचर
प्रति अंक रु. 20, वार्षिक 100

आयुर्वेट की पुस्तकें

Management of Mastitis
Mastilep and its Applications
Price: 1500/-

बायोगैस
आय ईंधन और खाद
मूल्य-300/-

हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
खाद्य एवं पोषण सुरक्षा
मूल्य : 300 रुपए

पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त करनें और पुस्तक मंगवाने के लिए आप निम्नलिखित पतें एवं दूरभाष पर संपर्क कर सकते हैं:-

AYURVET™

आयुर्वेट लिमिटेड

101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3,
सैक्टर-14, कौशाम्बी, गाजियाबाद -201010(उ.प्र.)
दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 91-120-7100202

इस गांव के युवाओं ने परंपरागत खेती छोड़ शुरू की लेयर फार्मिंग, हर महीने कमा रहे लाखों

इस गांव में कुछ वर्ष तक धान, गेहूं और गन्ने की खेती होती थी, लेकिन आज इस गांव के युवा परंपरागत खेती छोड़ लेयर फार्मिंग का व्यवसाय कर रहे हैं। युवाओं की आधुनिक सोच और मेहनत से यह गांव पूरे क्षेत्र में आर्थिक रूप से सबसे संपन्न गांवों में गिना जाने लगा है।

गोरखपुर जनपद में पोल्ट्री उद्योग का तेजी से विस्तार हो रहा है। कई युवा परंपरागत खेती छोड़ मुर्गीपालन और लेयर फार्मिंग का कारोबार कर अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। वहीं सैकड़ों ग्रामीणों को उनके गांव में रोजगार मिल रहा है। लेयर फार्मिंग और अंड़ा उत्पादन में गोरखपुर प्रदेश में अग्रणी जिलों में से हैं।

जनपद में सर्वाधिक अंड़े का उत्पादन विकास खंड सरदारनगर के गांव जगदीशपुर में हो रहा है। अकेले इस गांव में 28 से ज्यादा फार्म खुल चुके हैं। इस गांव में कुछ वर्ष तक धान, गेहूं और गन्ने की खेती होती थी, लेकिन आज इस गांव के युवा परंपरागत खेती छोड़ लेयर फार्मिंग का व्यवसाय कर रहे हैं। युवाओं की आधुनिक सोच और मेहनत से यह गांव पूरे क्षेत्र में आर्थिक रूप से सबसे संपन्न गांवों में गिना जाने लगा है।

राजीव कुमार सिंह ने बताया, ''वर्ष 2013 में लेयर फार्मिंग की शुरुआत की। सबसे पहले मैंने 8000 क्षमता वाले लेयर फार्मिंग का निर्माण कराया। उसके बाद मैंने प्रदेश सरकार की कुक्कुट योजना के तहत ऋण लेकर 25000 क्षमता वाले फार्म को खोल लिया। अब मुझे काफी मुनाफा होने लगा है। इसके साथ ही मैंने अपने फार्म पर करीब एक दर्जन से ज्यादा लोगों को रोजगार भी दिया है, जिससे उनका जीवन स्तर काफी सुधर रहा है।

लेयर फार्मिंग का व्यापार कृषि से ज्यादा मुनाफे वाला सौदा है, क्योंकि अब खेती में लागत ज्यादा और कमाई कम हो गई है, इसलिए मैंने खेती छोड़ इस बिजनेस को शुरू किया।

सरकार दे रही 40 लाख रूपए का लोन

प्रदेश में कॉमर्शियल लेयर फार्मिंग और ब्रायलर इकाइयों की स्थापना के लिए प्रदेश सरकार 40 लाख रुपए का लोन दे रही है। इसके साथ ही स्टैम्प ड्यूटी से लेकर फ्री में बिजली और मण्डी पर टैक्स छूट भी दे रही है। इस योजना का लाभ उठाकर आम लोग एक या दो इकाई स्थापित कर सकते हैं।

लेकिन इसकी शर्त है कि लेयर इकाई के लिए तीन एकड़ और ब्रायलर के लिए छः एकड़ जमीन होना जरूरी है। एक कॉमर्शियल लेयर इकाई से सालाना 32 लाख का लाभ कमाया जा सकता है। इस योजना के लिए जो लोन दिया जा रहा है उसे पांच साल में अदा करना होगा।

कई युवा लेयर फार्म खोलने की जुगत में इसी गांव के रहने वाले विनीत त्रिपाठी(32 वर्ष) एमटेक की पढ़ाई कर चुके हैं और किसी निजी कोचिंग में पढ़ाते हैं। विनीत भी लेयर फार्मिंग का व्यापार करना चाहते हैं। विनीत ने बताया, ''मेरे गांव में आज 28 से ज्यादा फार्म खुल चुके हैं और करीब पांच से ज्यादा निर्माणाधीन हैं। अंड़े का उत्पादन करने वाले किसान काफी खुशहाल हैं।

मेरे पास पांच एकड़ खेत है, जिसमें मैं धान और गेहूं की खेती करता हूं, लेकिन जितनी लागत लगती है, उसके हिसाब से मुझे मुनाफा नहीं हो रहा है। इसलिए मैं भी बहुत जल्द एक लेयर फार्म खोलने की तैयारी में हूं। इसके लिए लोन प्राप्त करने की प्रक्रिया के आवेदन कर दिया है। मेरे गांव के कई लोग लेयर फार्म खोलना चाहते हैं।''

इसी गांव के रहने वाले दया शंकर का भी 10000 हजार अंड़ों की क्षमता वाला लेयर फार्म है। दया शंकर ने बताया, 10 हजार अंड़ों की क्षमता वाला लेयर फार्म लगाने में करीब 45 लाख का खर्च आता है। करीब पांच वर्ष में पूरी लागत निकल जाती है। हम लोग पहले चूजा खरीदते हैं। एक चूजा पांच माह में तैयार हो जाता है। इसके बाद रोज एक अंड़ा देने लगता है। हम लोगों को एक अंड़े का तीन रुपए मिलता है।

मुर्गी के बीट से बनती है खाद

लेयर फार्म से मछलियों को चारा और खेत के लिए मुर्गियों के बीट से बनी जैविक खाद मुनाफे में मिलती है। एक वर्ष में 10000 की क्षमता वाले लेयर फार्म से 100 ट्राली जैविक खाद निकलती है। मुर्गी के बीट से बनी खाद फसलों के लिए काफी फायदेमंद है। आज कल इसकी मांग बहुत ज्यादा है। एक ट्राली खाद 1500 रुपये में बिकती है। इस तरह से लेयर फार्म का व्यापार करने वाले के लिए यह आय का अतिरिक्त स्रोत है।

फार्म की रखनी पड़ती है साफ-सफाई

मुर्गी फार्म का व्यापार करने वालों को हमेशा सतर्क रहना होता है, क्योंकि मुर्गियों में बहुत तेजी से रोग फैलते हैं। कई

बार एक साथ फार्म की सभी मुर्गियां मर जाती हैं। मुर्गी फार्म के मालिक राजीव ने बताया, ''अगर फार्म में नमी हो गई, तो मुर्गियों में बीमारी का खतरा रहता है, इसलिए समय-समय पर उस ज़मीन पर बालू मिट्टी, धान की भूसी और लकड़ी का बुरादा डालते रहते हैं। बाड़ों में साफ-सफाई के अलावा समय-समय पर टीकाकरण भी कराते हैं, जिससे अच्छा उत्पादन हो सके।''

□□

ब्रायलर मुर्गियों के लिए पानी का प्रबंध

ब्रायलर मुर्गियां 24 घंटे खाती रहती हैं। यह अन्य फ्री रेंज/देसी मुर्गियों की तरह रात को नहीं सोती हैं। यह रात दिन खाना खाती रहती हैं। इसी वज़ह से इन्हें पीने के पानी की बहुत आवश्यकता बहुत होती है। दूसरी बात हम जो दाना ब्रायलर मुर्गियों को देते हैं वह सुखा होता है, जिसकी वजह से भी इनको प्यास ज्यादा लगती है और खाना हज़म करने के लिए पानी बहुत आवश्यक होता है।

ब्रायलर मुर्गियों को कितने पानी की जरूरत

एक ब्रॉयलर मुर्गी 1 किलो मुर्गी दाना खाने के बाद 2-3 लीटर पानी पीती है। सर्दी के मौसम की तुलना में गर्मियों के मौसम में पानी की खपत दुगुनी हो जाती है, क्योंकि तापमान बहुत ज्यादा होता है।

ब्रॉयलर चूजों के पानी की जरूरत

प्रथम सप्ताह = 1X2 = 2 लीटर पानी/100 चूजे

दूसरा सप्ताह = 2X2 = 4 लीटर पानी/100 चूजे

तीसरा सप्ताह = 3X2 = 6 लीटर पानी/100 चूजे

ऊपर दिए हुए गणना के अनुसार ब्रायलर मुर्गियों को पानी देना बहुत ही आवश्यक है। ब्रायलर मुर्गियों को 21 दिन होने के बाद बड़ा साइज़ का ड्रिंकर दें, क्योंकि छोटे में उनको चोंच डालने में मुश्किल होती है।

पानी एक दम साफ-सुथरा होना चाहिए, जमा हुआ पानी ना दें, क्योंकि उससे इन्फेक्शन फैल सकता है और ब्रायलर मुर्गियों को रोग लग सकता है। हमेशा स्टॉक पानी में ब्लीचिंग पाउडर मिलाकर साफ रखें।

दाने और पानी के बर्तन

प्रत्येक 100 चूज़ों के लिए कम से कम 3 पानी और 3 दाने के बर्तन होना बहुत ही आवश्यक है। दाने और पानी के बर्तन आप मैन्युअल या आटोमेटिक किसी भी प्रकार का इस्तेमाल कर सकते हैं। मैन्युअल बर्तन साफ़ करने में आसान होते हैं, लेकिन पानी देने में थोड़ा कठिनाई होती है, पर आटोमेटिक वाले बर्तनों में पाइप सिस्टम होता है, जिससे टंकी का पानी सीधे पानी के बर्तन में भर जाता है। बर्तन साफ करने के बाद एक बार आप बर्तनों को विराक्लीन से धो दें, इससे बर्तन कीटाणुमुक्त हो जाते हैं ।

खर्च कम, लाभ ज्यादा
मुर्गीपालन

भारत के लगभग 90 लाख लोग मुर्गीपालन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और हर वर्ष सकल घरेलू उत्पाद में इसका 70 हजार करोड़ का योगदान है। आप भी कम लागत यानि 500 रूपए से बैकयार्ड मुर्गी पालन शुरू कर सकते हैं। अगर व्यावसायिक रूप भी देना चाहे तो 10-15 हजार रुपए की लागत से छोटा सा बांस का फार्म बनाकर मुर्गियां पाल सकते हैं। बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए ग्रामप्रिया, वनराजा कारी निर्भीक आदि उन्नत नस्लों को पाला जा सकता है। देसी नस्लों की अपेक्षा उन्नत नस्लों में अंडा देने की क्षमता भी ज्यादा होती है और शारीरिक वजन भी ज्यादा होता है। जगह की भी ज्यादा जरुरत नहीं होती है। एक मुर्गी के लिए एक वर्ग फीट जगह की आवश्यकता होती है और अंडे देने वाली मुर्गी के लिए ढाई वर्ग फीट प्रति मुर्गी की दर से जगह की जरूरत होती है।

इस माह से हम आपको प्रत्येक अंक में मुर्गी की दो नस्लों की जानकारी दिया करेंगे। चलिए इस अंक में हम आपको दे रहे हैं

कारी देवेन्द्र

- यह एक मध्यम आकार का दोहरे प्रयोजन वाला पक्षी है।
- कुशल आहार रूपांतरण-आहार लागत से ज्यादा उच्च सकारात्मक आय।
- अन्य स्टॉक की तुलना में उत्कृष्ट-निम्न लाइंग हाउस मृत्युदर।
- 8 सप्ताह में शरीर वजन-1700-1800 ग्राम।
- यौन परिपक्वता पर आयु-155-160 दिन।
- अंडे का वार्षिक उत्पादन- 190-200

विशेषताएं

इन्हें खिलाने में कोई खर्चा नहीं आता है। घर का बना खाना भी इनको डाल सकते हैं। यह चरने पर ही निर्भर रहती है। अंड़ा देते समय इनकी मृत्युदर कम होती है। इसका मांस शरीर के लिए काफी लाभदायक होता है।

ब्रायलर-कारीब्रो-विशाल(कारीब्रो-91)

- दिवस होने पर वजन-43 ग्राम
- 6 सप्ताह में वजन-1650 से 1700 ग्राम
- 7 सप्ताह में वजन-100 से 2200 ग्राम
- ड्रैसिंग प्रतिशतः 75 प्रतिशत

□□

थनैला रोग से बचाव एवं उपचार
दूध निकालते समय रखने वाली
9 सावधानियाँ
1
दूध निकालने से पहले अपने हाथ साबुन द्वारा अच्छे से धोएँ।
2
दूध निकालने से पहले थनों को अच्छे से साफ करें।
3
थनों की सफाई करते समय पहले पीछे वाले थनों को साफ करें।
4
दूध निकालने का सही तरीका।
5
12hrs.
अधिक दूध उत्पादन हेतु न्यूनतम 12 घंटे का अन्तराल
6
दूध निकालने के बाद पशु को कम से कम आधे घंटे तक ना बैठने दें।
7
थनैला रोग की जांच के लिए मैस्ट्रिप का प्रयोग करें।
8
थनैला रोग के उपचार के लिए मैस्टीलेप लगाएं।
9
थनैला रोग से बचाव के लिए यूनीसेलिट खिलाएं।
थनैला की रोकथाम
उच्च गुणवत्ता का दुग्ध उत्पादन
हर 15 दिन पर मैस्ट्रिप से थनैला रोग की जांच अवश्य करें।
पशुपालक के हित में जारी–मैस्टाईटिस मैनेजमेन्ट सेल द्वारा थनैला रोग की पहचान, उपचार एवं रोकथाम सम्बन्धित जानकारी

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जाँच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।
थनैला रोग के उपचार के लिए
125 ग्राम
125 मि.ली. स्प्रे
मैस्टीलेप 50 ग्राम ट्यूब में भी उपलब्ध है।
मैस्टीलेप
थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल
थनैला की जाँच के लिए
मैस्ट्रिप
दूध की जाँच के लिए
थनैला में सम्पूरक की तरह
10 ग्राम
यूनीसेलिट
एंटीऑक्सीडेन्ट एवं ट्रेस मिनरल सप्लीमेन्ट
अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर पर संपर्क करें।
1800-1233-734
सोम-शुक्र प्रातः 9 से 6 बजे तक

पशु प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम

लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय (हिसार, हरियाणा)

द्वारा प्रमाणित

प्रशिक्षण स्थल

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, चिडाना, मुंडलाना चौकी

विषयः

- **दुधारू पशुओं का प्रबंधन** : दुधारू पशुओं की उत्तम नस्लें,दुधारू पशुओं का आधुनिक आवास, ग्रीष्मकाल एवं सर्दी ऋतु में दुधारू पशुओं का प्रबंधन, नवजात पशु, गाभिन पशु और दूध देने वाले पशुओं की देखभाल और उनका प्रबंधन, लाभदायक डेरी व्यवसाय।
- **दुधारू पशुओं का चारा प्रबंधन** : दुधारू पशुओं का संतुलित आहार एवं उसका महत्व, दुधारू पशुओं के लिए वर्ष भर हरे चारे का प्रबंधन—साइलेज अथवा अचार।
- **दुधारू पशुओं का रोग नियंत्रणः** दुधारू पशुओं की संक्रामक और गैर संक्रामक बीमारियां एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं का टीकाकरण और उनका प्रबंधन, थनैला रोग का नियंत्रण, और दुधारू पशुओं में होने वाले चयापचय रोग एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं में अन्तः एवं बाह्य परजीवियों का नियंत्रण, दुधारू पशुओं में होने वाले प्रजनन संबंधी रोग एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं की प्रारंभिक प्राथमिक चिकित्सा, लौह रोग एवं उनकी रोकथाम।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 8288954556, 9729288992, 8607272777, 996128765

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम
बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन
स्वस्थ ब्यांत
बढ़िया पाचन प्रणाली
स्वस्थ अयन
एक्सापार
जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए
AYURVET
आयुर्वेट लिमिटेड
कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587
रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092
पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान